कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 13 अक्टूबर 2025 वर्ष-24 अंक - 6 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ - 1

प्रधानमंत्री ने किया धन-धान्य कृषि योजना का शुभारंभ

नई दिल्ली (कृषक जगत)। पूसा, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कृषि क्षेत्र के लिए कई बड़ी घोषणाएँ कीं। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी भी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री ने दो नई योजनाएँ शुरू कीं

● **प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना:** आकांक्षी जिलों में 11 मंत्रालयों की 36 उप-योजनाओं को जोड़कर कृषि विकास को गति देने के लिए। ● **दलहन आत्मनिर्भरता मिशन:** देश को दाल उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने और आयात घटाने के लिए। उन्होंने कृषि अवसंरचना कोष, पशुपालन, मत्स्य पालन और खाद्य प्रसंस्करण से जुड़ी 1100 परियोजनाओं का शुभारंभ व शिलान्यास किया, जिससे रु. 42,000 करोड़ से अधिक का निवेश होगा। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में कोल्ड स्टोरेज, वेयरहाउस और प्रोसेसिंग यूनिट्स विकसित होंगी।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया, यूरिया रु. 266 और डीएपी रु. 1350 में उपलब्ध है; सरकार ने बढ़ी लागत का बोझ किसानों पर नहीं पड़ने दिया। कृषि यंत्रों पर जीएसटी घटाया गया है।

एमएसपी में वृद्धि: गेहूं रु. 160, चना रु. 200+, मसूर रु. 300, सरसों रु. 250, कुसुम रु. 600 प्रति क्विंटल बढ़ाया गया। श्री चौहान ने कहा किसान सम्मान निधि से अब तक रु. 3.90 लाख करोड़ किसानों के खातों में पहुंचे। किसान क्रेडिट कार्ड से रु. 10 लाख करोड़ ऋण और रु. 1.62 लाख करोड़ ब्याज सब्सिडी दी गई। वहीं फसल बीमा योजना के तहत रु. 1.83 लाख करोड़ मुआवजा मिला। देशभर में 52 लाख किसान एफपीओ के शेयरहोल्डर बने, और 1100 एफपीओ रु. 15,000 करोड़ से अधिक टर्नओवर तक पहुँचे। कार्यक्रम में उत्कृष्ट किसानों, एफपीओ और सहकारी समितियों को भी सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पीएम धन धान्य योजना के उद्घाटन कार्यक्रम में वीसी के माध्यम से शामिल हुए।

प्रदेश में खेती-किसानी की तस्वीर बदलेगी : श्री साय

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय राजधानी रायपुर के इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित कृषक सभागार से हजारों किसानों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा ऑनलाईन जुड़कर इस अभियान के शुभारंभ के साक्षी बने।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि बड़ी खुशी की बात है कि किसान हित में दो नई योजनाओं में छत्तीसगढ़ के तीन जिलों जशपुर, कोरबा और दंतेवाड़ा को भी शामिल किया गया है। इसके लिए मैं छत्तीसगढ़ की तीन करोड़ जनता की ओर से विशेष रूप से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। उन्होंने इन दो नई योजनाओं के लिए प्रदेश के किसानों को बधाई और शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि इन योजनाओं से खेती-किसानी की तस्वीर बदलेगी और आर्थिक सम्पन्नता भी आएगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने योजनाओं के शुभारंभ के अवसर पर कृषि विभाग द्वारा लगाए गए स्टालों का निरीक्षण किया और कृषि अभियांत्रिकी सब मिशन योजना के तहत किसानों को टैक्टरों, कृषि उपकरणों की चाबी भी सौपी और अनुदान राशि का चेक प्रदान किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने टैक्टर पर बैठकर किसानों का उत्साहवर्धन किया।

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

धनतेरस एवं दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

कृषक जगत के सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, प्रतिनिधियों एवं शुभचिंतकों को धनतेरस एवं दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

- कृषक जगत परिवार

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।

(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.33, ०.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप® प्रति बूंद, फसल भरपूर!®

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि. छोटे छोटे कदम. आसमान छूने का दम!®

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; **वेबसाईट:** www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

पराली प्रबंधन पर किसानों को जागरुक करना बेहद जरूरी : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। पराली प्रबंधन को लेकर नई दिल्ली, कृषि भवन में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव की संयुक्त रूप से बैठक हुई। बैठक में पंजाब के कृषि मंत्री श्री गुरमीत सिंह खुड्डियां, हरियाणा के कृषि मंत्री श्री श्याम सिंह राणा, उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही और दिल्ली के पर्यावरण मंत्री श्री मजिंदर सिंह सिरसा वर्चुअली शामिल रहे। बैठक में पराली जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण को कम करने के लिए सक्रिय कदम उठाने और धान पराली के बेहतर उपयोग सहित किसानों के बीच जागरुकता, वित्तीय सहायता, प्रभावी निगरानी, फसल प्रबंधन व विविधिकरण को लेकर व्यापक चर्चा हुई।

बैठक में पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्रियों ने केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह को अपने-अपने राज्यों में पराली प्रबंधन की स्थिति से अवगत करवाया साथ ही बताया कि पूरी सक्रिता और सतर्कता के साथ पराली प्रबंधन की योजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अधिकारियों, कर्मचारियों सहित पूरा विभाग गंभीरतापूर्वक कार्य में जुटा है।

बैठक में हरियाणा के कृषि मंत्री ने बताया कि राज्य में वित्तीय सहायता के माध्यम से किसानों को पराली ना जलाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिसका व्यापक असर हुआ है।

राज्यों के प्रयासों की सराहना करते हुए केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि राज्यों में पराली प्रबंधन को लेकर अच्छा काम हो रहा है, लेकिन निरंतर प्रयास जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसानों के बीच जनजागरुकता अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए पंचायत और ग्रामीण स्तर पर जनप्रतिनिधियों व नोडल अधिकारियों की भी भागीदारी यदि सुनिश्चित की जाए, तो और बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

केंद्रीय मंत्री ने बैठक में फसल प्रबंधन, सीधी बुवाई, विविधिकरण, राज्यों द्वारा कार्य योजना धनराशि का उचित उपयोग, प्रभावी निगरानी साथ ही साथ लक्ष्यबद्ध रूप से व्यावाहारिक योजनाओं के निर्माण को लेकर भी चर्चा की। बैठक में कृषि सचिव श्री देवेश चतुर्वेदी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट सहित मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 दो चरणों में होगा

मतगणना 14 नवंबर को होगी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत निर्वाचन आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 का पूरा शेड्यूल घोषित कर दिया। राज्य की 243 विधानसभा सीटों पर वोटिंग दो चरणों में होगी - पहला चरण 6 नवंबर को और दूसरा चरण 11 नवंबर को। सभी सीटों की मतगणना एक साथ 14 नवंबर को होगी। चुनाव आयोग के अनुसार, बिहार में 7.4 करोड़ से अधिक मतदाता हैं, जिनमें 14 लाख नए वोटर शामिल हैं। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने कहा कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए हर जिले में पुलिस अवलोकक तैनात किए जाएंगे। वर्तमान विधानसभा का कार्यकाल 22 नवंबर को समाप्त हो रहा है, इसलिए चुनाव समय पर पूरे होंगे। पहले चरण में 18 जिलों की 121 सीटों पर वोटिंग होगी, जबकि दूसरे चरण में 20 जिलों की 122 सीटें शामिल हैं।

ई-नाम प्लेटफॉर्म का विस्तार, 9 नई वस्तुएं जुड़ीं

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि मंत्रालय ने 9 अतिरिक्त वस्तुओं को शामिल करके राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नाम) के दायरे का विस्तार करके इसे और मजबूत किया है, जिससे इस मंच पर व्यापार योग्य कृषि वस्तुओं की कुल संख्या 247 हो गई है।

यह महत्वपूर्ण कदम किसानों, व्यापारियों और अन्य हितधारकों की निरंतर मांग को ध्यान में रखते हुए उठाया गया है, ताकि व्यापक कमोडिटी कवरेज और बाजार एकीकरण को और मजबूत किया जा सके। इस पहल का उद्देश्य किसानों और व्यापारियों को एक पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी डिजिटल ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म तक पहुंचने में सक्षम बनाकर उनके लिए अवसरों को बढ़ाना है, जो पूरे भारत के बाजारों को जोड़ता है। जोड़ी गई 9 नई वस्तुएं इस प्रकार हैं-

- ग्रीन टी
- चाय
- अश्वगंधा की सूखी जड़ें
- सरसों का तेल
- लैवेंडर तेल
- मेंथा ऑयल
- वर्जिन जैतून का तेल
- लैवेंडर के सूखे फूल
- ब्रोकन राइस।

सोयाबीन और मक्का के दाम गिरे, किसानों को एमएसपी से कम कीमतें

नई दिल्ली (कृषक जगत)। खरीफ 2025 में प्रमुख फसलों सोयाबीन और मक्का की कीमतें कमजोर रहीं। बुवाई में कमी और एमएसपी बढ़ने के बावजूद किसानों को दोनों ही फसलों के लिए समर्थन मूल्य से कम दाम मिले।

सोयाबीन की स्थिति

कृषि मंत्रालय के अनुसार, खरीफ 2025 में

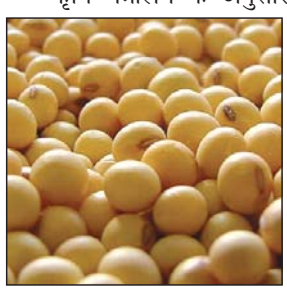

सोयाबीन का रकबा घटकर 120.32 लाख हेक्टेयर रह गया (पिछले साल 126.04 लाख हेक्टेयर)। सरकार ने एमएसपी रु. 5,328 प्रति क्विंटल तय किया है, परंतु सितंबर में देशभर की मंडियों में औसत भाव केवल रु. 4,617 प्रति क्विंटल रहे - यानी करीब 11.6 प्रतिशत गिरावट।

मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और तेलंगाना में भाव 7-15 प्रतिशत तक गिरे, जबकि तमिलनाडु में रिपोर्टिंग त्रुटि जैसी असामान्य उछाल (रु. 8,562/क्विंटल) दर्ज हुई।

कमज़ोर अंतरराष्ट्रीय मांग, सोयाबीन तेल व खली के दामों में गिरावट और खराब गुणवत्ता वाली फसल ने बाजार को दबाव में रखा। किसानों को एमएसपी और वास्तविक दाम के बीच करीब रु. 1200 प्रति क्विंटल का घाटा झेलना पड़ा।

मक्का बाजार पर दबाव

सितंबर 2025 में मक्का का औसत भाव रु. 2,115 प्रति क्विंटल रहा, जो अगस्त से 9 प्रतिशत और पिछले साल से 10 प्रतिशत कम है।

खरीफ 2025 में मक्के की बोआई 18 प्रतिशत बढ़कर 94.62 लाख हेक्टेयर तक पहुंची, जिससे भारी आवक और बढ़ी आपूर्ति ने दाम नीचे खींचे।

मध्य प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र में भाव 18-21 प्रतिशत तक गिरे। हालांकि इथेनॉल उत्पादन की मांग बढ़ी है, परंतु DDGS जैसे सह-उत्पाद ने पशु आहार में मक्के की पारंपरिक मांग को कम किया है।

आगे की दिशा

विशेषज्ञों के अनुसार, आने वाले महीनों में कीमतें इस पर निर्भर करेंगी कि-

● सरकार एमएसपी पर कितनी खरीद करती है। ● इथेनॉल संयंत्र मक्का की खरीद कितनी बढ़ाते हैं, और ● अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल व अनाज की कीमतें कैसी रहती हैं।

किसानों को सलाह दी गई है कि वे फसल बेचने का सही समय चुनें, भंडारण और अनुबंध खेती जैसे विकल्प अपनाकर नुकसान कम करें।

राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान का 14वाँ स्थापना दिवस

रायपुर। आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान (NIBSM), रायपुर का 14वाँ स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. मंगला राय, पूर्व सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, आईसीएआर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. राय ने अपने महानिदेशक, आईसीएआर के कार्यकाल के दौरान इस संस्थान की परिकल्पना एवं स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

कार्यक्रम में डॉ. टी. पी. राजेन्द्रन, पूर्व सहायक महानिदेशक (पादप संरक्षण), डॉ. पियूष पाण्डेय, कुलपति, एमिटी विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ तथा डॉ. जे. कुमार, पूर्व संयुक्त निदेशक, आईसीएआर-एनआईबीएसएम विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए।

कार्यक्रम में डॉ. मंगला राय ने वन हेल्थ की अवधारणा को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया तथा जैविक और अजैविक स्ट्रेस प्रबंधन के बीच समन्वय की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी को किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु नवाचारी एवं टिकाऊ उपकरण विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए। डॉ. पी. के. राय, निदेशक, आईसीएआर-एनआईबीएसएम ने संस्थान की उपलब्धियों एवं गतिविधियों का प्रस्तुतिकरण किया तथा कृषि विज्ञान के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन विकसित करने हेतु उच्च शिक्षा एवं क्षमता निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर दो प्रगतिशील किसानों को सतत कृषि पद्धतियों में उत्कृष्ट योगदान हेतु सम्मानित किया गया। साथ ही, विभिन्न श्रेणियों में संस्थान के श्रेष्ठ कर्मचारियों को भी उनके उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के दौरान एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस पर एक संकलन, तकनीकी पुस्तिकाएँ एवं नीति पत्र भी अतिथियों द्वारा जारी किए गए।

अतिथियों का स्वागत एवं उद्बोधन तथा कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक, आईसीएआर-एनआईबीएसएम द्वारा किया गया।

राज्य में धान खरीदी 15 नवम्बर से होगी

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में मंत्रालय में आयोजित कैबिनेट की बैठक में राज्य के किसानों से खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। राज्य में 25 लाख से अधिक किसानों से 3100 रूपये प्रति क्विंटल की दर से होगी धान खरीदी 15 नवम्बर से शुरू होगी एवं 31 जनवरी 2026 तक चलेगी। धान के व्यपवर्तन एवं पुर्नचक्रण को रोकने की चौकस व्यवस्था व धान खरीदी हेतु मजबूत प्रशासनिक ढांचा तैयार किया गया है। अधिक पारदर्शिता के साथ किसानों को समय से भुगतान 6 से 7 दिन के भीतर किया जाएगा। वहीं टोकन तुंहर हाथ मोबाईल एप के माध्यम से मिलेगा। उक्त अवधि में 25 लाख किसानो से 3100 रूपये प्रति क्विंटल की दर से 21 क्विंटल प्रति एकड़ की सीमा तक धान की खरीदी की जावेगी।

मंत्रिपरिषद के निर्णय

धान खरीदी में पारदर्शिता को बढावा देने इस वर्ष ई-केवाईसी के माध्यम से, भारत सरकार कृषि मंत्रालय के एग्रीस्टेक पोर्टल में किसान पंजीयन को अनिवार्य किया गया है, पंजीयन 31 अक्टूबर 2025 तक कराया जा सकता है। डिजीटल क्राप सर्वे के माध्यम से 23 लाख हेक्टेयर रकबे का सर्वे कराया गया है जिसके फलस्वरूप धान के रकबे का ऑनलाईन निर्धारण डिजीटल रूप से सुनिश्चित हुआ है।

राज्य में 2739 खरीदी केन्द्रो के माध्यम से धान खरीदी किये जाने हेतु समितियों में समुचित व्यवस्था किये जाने के निर्देश दिये गये है। समितियों को खरीद विपणन वर्ष 2025-26 में शून्य सुखत आने पर 5 रूपये प्रति क्विंटल के मान से प्रोत्साहन दिया जायेगा। भारत सरकार द्वारा खरीफ वर्ष 2025-26 हेतु केन्द्रीय पूल में 73 लाख मीट्रिक टन चावल का लक्ष्य दिया गया है।

प्रदेश में धान की रिसाईकलिंग रोके जाने एवं बेहतर मॉनिटरिंग व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने हेतु पहली बार इंटिग्रेटेड कमाण्ड एण्ड कन्द्रोल सेंटर मार्कफेड कार्यालय में स्थापित किये जाने का निर्णय लिया गया है। जिलों में भी कंट्रोल रूम बनाए जाएंगे। सीमावर्ती राज्यों से खरीदी केन्द्रो धान की आवक रोके जाने हेतु विशेष चेकिंग दल जिलेस्तर पर गठित किये जाने के निर्देश दिये गये है।

खेती-किसानी को विज्ञान आधारित दृष्टिकोण से समझें युवा : डॉ. मंगला राय

कृषि वैज्ञानिक डॉ. राय ने वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों का किया मार्गदर्शन

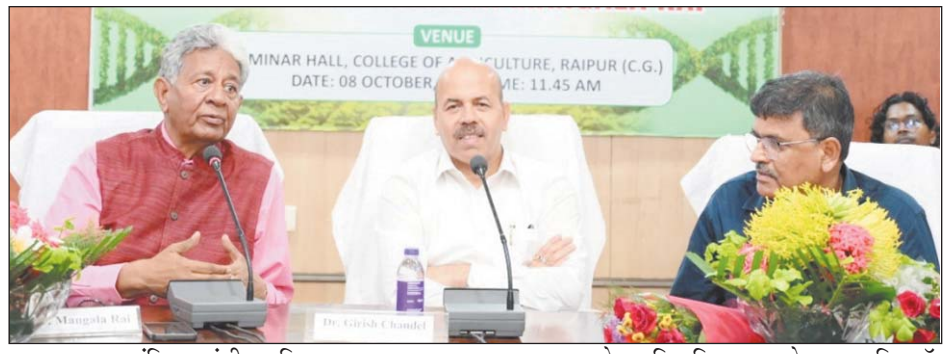

रायपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा कृषि महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में 'डॉ. मंगला राय से संवाद' नामक एक प्रेरणादायक सत्र आयोजित किया गया। जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक एवं विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ मंगला राय ने वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं संकाय सदस्यों को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी व्यक्तित्वों से रूबरू कराना तथा उनके अनुभवों से प्रेरणा प्राप्त करना था।

डॉ. राय ने संवाद के दौरान कृषि अनुसंधान, नवाचार, और टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर अपने बहुमूल्य विचार साझा किए। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे खेती-किसानी को विज्ञान आधारित दृष्टिकोण से समझें और उन्नत तकनीकों का अधिकाधिक उपयोग करें। उनके प्रेरक उद्बोधन ने उपस्थित श्रोताओं को गहराई से प्रभावित किया।

इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, वरिष्ठ अधिकारीगण, प्राध्यापक, वैज्ञानिक, छात्र-छात्राएं एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुसंगठित रूप से किया गया एवं अंत में सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। डॉ रॉय ने अपने प्रवास के दौरान इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में संचालित अनुसंधान गतिविधियों एवं उपलब्ध सुविधाओं का जायज़ा भी लिया और प्रसन्नता ज़ाहिर की।

जनहित के कार्यों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी : मुख्यमंत्री

कलेक्टर्स कॉन्फ्रेंस की मैराथन बैठक 9 घंटे चली

- **कलेक्टरों को धान खरीदी की तैयारियां करने के निर्देश**
- **धान खरीदी में अनियमितता पाए जाने पर कलेक्टर होंगे जिम्मेदार**
- **प्रभारी सचिवों को जिलों में धान खरीदी की पैनी निगरानी करने के निर्देश**
- **कलेक्टरों को विशेष शिविरों के माध्यम से शत प्रतिशत पंजीयन करने के निर्देश**
- **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में न छूटें कोई पात्र किसान**
- **योजना का लाभ दिलाने समय सीमा निर्धारित कर काम करें कलेक्टर**
- **बस्तर और सरगुजा संभाग में संवेदनशीलता के साथ विशेष फोकस करें अधिकारी**

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में मंत्रालय में आयोजित कलेक्टर्स कॉन्फ्रेंस 2025 में सुशासन, पारदर्शिता और जनहित के नए मानक तय किए गए। बैठक की शुरुआत निर्धारित समय से पहले हुई, जिसने पूरे प्रशासन को मुख्यमंत्री की वर्क-डिसिप्लिन और परिणाम केंद्रित कार्यशैली का सीधा संदेश दिया। बैठक में मुख्य सचिव श्री विकास शील, सभी विभागीय सचिव, संभागायुक्त और कलेक्टर उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने प्रारंभ से ही स्पष्ट कर दिया कि शासन की नीतियों और योजनाओं का अंतिम लाभ जनता तक समयबद्ध और पारदर्शी तरीके से पहुँचना ही सुशासन का वास्तविक अर्थ है — और इस दिशा में किसी भी स्तर पर ढिलाई स्वीकार्य नहीं होगी।

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह कॉन्फ्रेंस केवल समीक्षा बैठक नहीं, बल्कि जनहित के नए मानक तय करने का अवसर है। उन्होंने अधिकारियों को चेताया कि जिलों में योजनाओं के क्रियान्वयन में परिणाम दिखाई देने चाहिए, केवल रिपोर्टों में नहीं।

मुख्यमंत्री ने कलेक्टर्स कांफ्रेंस में कहा कि शासन की नीतियों और योजनाओं का अंतिम उद्देश्य आम जनता तक योजनाओं का लाभ पहुँचाना है। उन्होंने कहा कि जनता के बीच आपकी उपस्थिति और संवेदनशीलता ही आपकी पहचान है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि धान खरीदी 15 नवंबर से प्रारंभ होगी और इसकी सभी तैयारियाँ समय पर पूरी कर ली जाएं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि धान खरीदी में किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर सीधे कलेक्टर जिम्मेदार होंगे। धान खरीदी में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक धान खरीदी केंद्र की मॉनिटरिंग हो। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रभारी सचिव जिलों में लगातार निगरानी रखें और संवेदनशील केंद्रों की विशेष मॉनिटरिंग करें। उन्होंने कहा कि धान खरीदी की पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता और सुगमता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि खरीदी की चौकसी बढ़ाने के लिए अब इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर का उपयोग किया जाएगा। इससे जिलों में निगरानी तेज होगी और किसी भी गड़बड़ी पर तत्काल कार्रवाई संभव होगी। उन्होंने निर्देश दिया कि अंतरराज्यीय सीमावर्ती जिलों में विशेष सतर्कता बरती जाए, ताकि बाहर से धान की अवैध आवाजाही को रोका जा सके। मुख्यमंत्री ने विशेष पिछड़ी जनजातियों के किसानों के लिए विशेष निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इन जनजातीय इलाकों में विशेष शिविरों के माध्यम से 100 प्रतिशत पंजीयन सुनिश्चित किया जाए।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि एक भी पात्र किसान वंचित न रहे, यह प्रशासन की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि जिलों में निर्धारित समय सीमा के भीतर सभी पात्र किसानों को लाभ पहुँचना चाहिए। उन्होंने कमिश्नरों को निर्देश दिया कि बस्तर और सरगुजा सम्भाग में विशेष रूप से योजना की प्रगति की सतत समीक्षा करें।

मुख्यमंत्री श्री साय ने ऊर्जा विभाग की समीक्षा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना का लाभ अधिकतम लोगों तक पहुँचे। उन्होंने निर्देश दिए कि ग्रामीण क्षेत्रों में हितग्राहियों को बैंक फाइनेंस की सुविधा आसानी से उपलब्ध कराई जाए, ताकि कोई भी पात्र परिवार योजना से वंचित न रहे।

कृषि यांत्रिकीकरण सबमिशन के तहत ऑनलाईन आवेदन शुरू

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य बीज एवं कृषि विकास निगम लिमिटेड द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 में चैम्प्स प्रणाली अंतर्गत क्रियान्वित कृषि यांत्रिकीकरण सबमिशन के तहत अनुदान पर कृषकों को ट्रैक्टर प्रदाय करने हेतु ऑनलाईन आवेदन 9 अक्टूबर से प्रारंभ किया जा रहा है। योजना के तहत कृषकों को अनुदान पर ट्रैक्टर प्रदाय किया जाएगा। इच्छुक कृषक चैम्प्स के पोर्टल http://champs.cgstate.gov.in के माध्यम से 9 अक्टूबर से कार्यालयीन समय 10 बजे से आवेदन कर सकते हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

मन की दुर्बलता से अधिक भयंकर और कोई पाप नहीं।
- स्वामी विवेकानन्द

किसानों की मेहनत, बाजार की बेरुखी और प्रसंस्करण की जरूरत

हर साल बरसात के मौसम में हरी सब्जियों के साथ प्याज और लहसुन की कीमतें तेज़ी से बढ़ जाती हैं। यही वजह है कि आम उपभोक्ता गर्मियों के दिनों में इनका संग्रह कर लेते हैं। लेकिन यदि प्याज को उचित वातावरण और तापमान में संग्रहित नहीं किया जाए तो उसमें सड़न शुरू हो जाती है, जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। जब बाजार में आवक कम होती है तो कीमतें बढ़ती हैं और किसान उम्मीद से मंडियों का रुख करते हैं। इस साल परिदृश्य बिल्कुल उलट गया। मध्यप्रदेश के मंदसौर, नीमच और अन्य मंडियों में प्याज-लहसुन के भाव बरसात के दिनों में बढ़ने के बजाय गिर गए। दो-तीन रुपये किलो की दर पर बिकना किसानों के लिए गहरी निराशा का कारण बना। छोटे और सीमांत किसानों के लिए, जिनकी आय के साधन पहले से ही सीमित हैं, यह हालात किसी तुषारापात से कम नहीं रहे।

यह घटना नई नहीं है। इसी साल फरवरी-मार्च में टमाटर के दामों में भारी गिरावट से किसान इतने हताश हुए कि उन्होंने टमाटर को मंडियों तक ले जाने के बजाय खेतों में ही सड़ने दिया। जब भी किसी फसल की आवक मांग से अधिक हो जाती है, कीमतें गिरना स्वाभाविक है। सवाल यह है कि यदि उत्पादन अधिक हो जाए तो किसान नुकसान से कैसे बचें? चूंकि देश के 85 प्रतिशत से अधिक

किसान लघु और सीमांत श्रेणी के हैं, वे मांग का अनुमान लगाकर उत्पादन नहीं कर सकते। ऐसे में अधिशेष उत्पादन का प्रसंस्करण ही एकमात्र व्यवहारिक उपाय है।

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा फल और सब्जी उत्पादक देश है, लेकिन प्रसंस्करण का स्तर मात्र 2 प्रतिशत के आसपास है। यही कारण है कि हर साल करोड़ों टन उपज बर्बाद हो जाती है। सरकार ने खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए मेक इन इंडिया और उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन जैसी योजनाएं शुरू की हैं। 28 फरवरी 2025 तक प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत 41 मेगा फूड पार्क, 394 कोल्ड चेन प्रोजेक्ट और 536 खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को मंजूरी दी जा चुकी है। फिर भी, जमीनी स्तर पर पर्याप्त प्रगति न होने के कारण किसान अपनी फसल को उचित मूल्य पर बेचने से वंचित हैं।

नीतिगत प्राथमिकता की जरूरत

यह स्वीकार करना होगा कि गेहूं, धान, दलहन जैसी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की व्यवस्था है, लेकिन फल और सब्जियों को इसके दायरे में लाना संभव नहीं है। इसलिए किसानों के हितों की रक्षा के लिए खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को प्राथमिकता देना ही एकमात्र रास्ता है। यदि प्रसंस्करण क्षमता मजबूत हो तो अधिशेष उत्पादन भी लाभ में बदल सकता है। इससे किसान को बेहतर मूल्य मिलेगा, उपभोक्ताओं को प्रतिस्पर्धी दरों पर उत्पाद मिलेंगे और देश की खाद्य सुरक्षा भी सुदृढ़ होगी।

आज आवश्यकता इस बात की है कि केंद्र और राज्य सरकारें प्रसंस्करण उद्योग की स्थापना और विस्तार को उच्च प्राथमिकता दें। यदि हम फसल बर्बादी को रोकने और किसानों को लागत से ऊपर कीमत दिलाने में सफल होते हैं तो यह न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा बल्कि किसानों की आर्थिकी को स्थायी आधार भी प्रदान करेगा। प्याज और लहसुन के मौजूदा संकट ने हमें यह स्पष्ट संदेश दिया है कि केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं, बल्कि प्रसंस्करण की मजबूत व्यवस्था खड़ी करना समय की मांग है।

आमदनी में पारंपरिक खेती से आगे नहीं प्राकृतिक खेती

न ही आहार विविधता में दिलाती है खास बढ़त

● सचिन श्रीवास्तव

देश में खेती-किसानी के तरीकों को लेकर लंबे समय से बहस होती रही है। रासायनिक खाद और कीटनाशकों पर आधारित पारंपरिक खेती को जहां अधिक उत्पादन देने वाला माना जाता है, वहीं प्राकृतिक खेती को टिकाऊ, स्वास्थ्यकर और पर्यावरण के अनुकूल बताया जाता है। लेकिन हाल ही में किए गए एक अध्ययन ने इस बहस को नए सिरे से खोल दिया है। अध्ययन में पाया गया है कि प्राकृतिक खेती न तो आमदनी के मामले में पारंपरिक खेती से आगे है और न ही आहार विविधता में कोई खास बढ़त दिलाती है। बल्कि यह वर्ग, जाति और शिक्षा के आधार पर एक अलग सामाजिक संरचना को सामने लाती है।

यह अध्ययन 'रामकृष्ण मिशन विवेकानंद एजुकेशनल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर एंड रूरल डवलपमेंट की ओर से किया गया। इसमें हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और झारखंड को शामिल किया गया। अध्ययन का उद्देश्य था- प्राकृतिक खेती का पोषण पर क्या असर है और यह व्यापक सामाजिक-आर्थिक संरचना में किस तरह शामिल होती है।

अध्ययन में पाया गया कि प्राकृतिक खेती करने वाले परिवारों के पास खाद्य सुरक्षा और आत्मनिर्भरता अधिक है। वे अपने लिए भोजन का अधिकांश हिस्सा खुद पैदा कर लेते हैं और बाज़ार पर कम निर्भर रहते हैं। इसके उलट पारंपरिक किसान अधिकतर खाद्य सामग्री के लिए बाज़ार पर निर्भर रहते हैं।

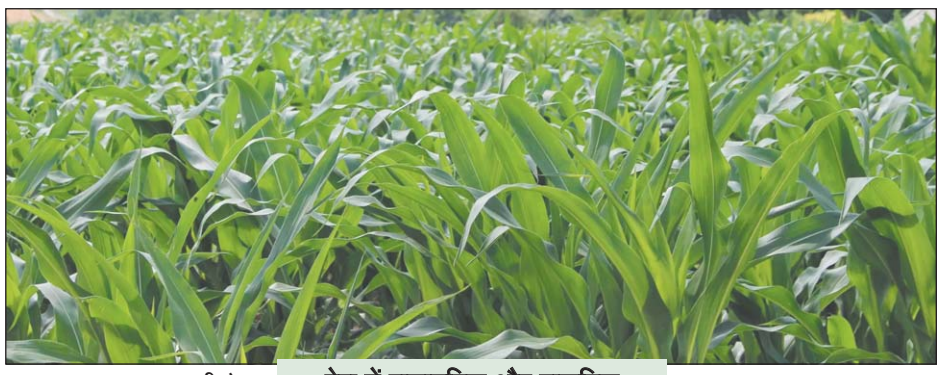

आम धारणा यह रही है कि प्राकृतिक खेती करने वाले परिवार ज्यादा पोषणयुक्त भोजन करते होंगे। लेकिन अध्ययन ने यह मिथक तोड़ दिया। दोनों ही समूहों के खानपान में कोई बड़ा अंतर नहीं मिला। यहाँ तक कि आहार विविधता पारंपरिक खेती करने वालों में थोड़ी अधिक पाई गई, क्योंकि वे बाज़ार से अलग-अलग खाद्य वस्तुएँ खरीद लेते हैं।

देश में रासायनिक और प्राकृतिक खेती के बीच जारी बहस को एक नए अध्ययन ने नया मोड़ दिया है। रामकृष्ण मिशन विवेकानंद एजुकेशनल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि प्राकृतिक खेती न तो आय में पारंपरिक खेती से आगे है, न ही आहार विविधता में। बल्कि यह वर्ग, जाति और शिक्षा के आधार पर एक नई सामाजिक संरचना को रेखांकित करती है, जहाँ टिकाऊपन तो है, पर समानता नहीं।

प्राकृतिक खेती करने वाले किसान हरित खाद, जैविक तरल खाद, वर्मी-कम्पोस्ट जैसी तकनीकों को प्राथमिकता देते हैं। यह टिकाऊ खेती का उदाहरण है। लेकिन अध्ययन में यह भी पाया गया कि पारंपरिक किसान भी अब इन तरीकों को अपनाने लगे हैं- जैसे शून्य जुताई, न्यूनतम जुताई, हरी खाद और जैव-उर्वरक का उपयोग। यानी दोनों पद्धतियों के बीच का अंतर धीरे-धीरे धुंधला होता जा रहा है।

इस बारे में एग्रोइकोलॉली विशेषज्ञ और अध्ययन दल के सदस्य अंशुमन दास प्राकृतिक और पारंपरिक खेती की तुलना कोई काले-सफेद जैसी स्थिति नहीं है। दोनों के बीच की रेखाएं धुंधली हैं। जरूरत है गहराई से समझने की कि टिकाऊ और लाभकारी खेती कैसे आगे बढ़ाई जाए।

यह है फर्क

हालांकि एक फर्क यह सामने आया कि पारंपरिक खेती करने वाले किसान कृषि के अलावा अन्य आय स्रोतों- जैसे सरकारी या निजी नौकरी पर निर्भर रहते हैं, जबकि प्राकृतिक खेती करने वाले पूरी तरह कृषि पर टिके रहते हैं।

युवाओं में पारंपरिक खेती प्रचलित

अध्ययन में सामने आया कि प्राकृतिक खेती अपनाने वाले अधिकतर किसान उम्र में बड़े, शिक्षित और ऊंची जाति से जुड़े होते हैं। आंकड़ों के अनुसार, प्राकृतिक खेती करने वालों में 46-61 वर्ष आयु वर्ग के 38.67 प्रतिशत और 62 वर्ष से ऊपर के 18.67 प्रतिशत किसान शामिल थे। इसके उलट पारंपरिक खेती करने वाले 30-45 वर्ष आयु वर्ग के 48 प्रतिशत किसान थे, यानी पारंपरिक खेती अपेक्षाकृत युवा किसानों के बीच अधिक प्रचलित है। इसके अलावा, प्राकृतिक खेती अधिकतर पुरुषों द्वारा की जाती है, जबकि पारंपरिक खेती में महिलाओं की भागीदारी अधिक देखी गई।

सामान्य और एसटी में प्राकृतिक, ओबीसी-एससी में पारंपरिक खेती ज्यादा प्रचलित

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह रहा कि प्राकृतिक खेती सामान्य वर्ग की जातियों और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) में अधिक प्रचलित है, जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और अनुसूचित जातियों (एससी) में पारंपरिक खेती अधिक लोकप्रिय है। विशेषज्ञों के अनुसार, कई क्षेत्रों में आदिवासी आबादी पारंपरिक रूप से बिना रसायन वाली खेती करती रही है, इसलिए उनकी संख्या प्राकृतिक खेती में अधिक दिखती है।

उच्च शिक्षित कर रहे प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती करने वालों में उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की संख्या भी अधिक है। इसका अर्थ है कि पढ़ाई-लिखाई का स्तर खेती की पद्धति चुनने में अहम भूमिका निभाता है। यह बात नीति-निर्माताओं के लिए खास महत्व रखती है क्योंकि शिक्षा और जागरूकता खेती में बदलाव का रास्ता खोल सकते हैं।

आय में कोई बड़ा अंतर नहीं

अध्ययन में सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि प्राकृतिक और पारंपरिक खेती के बीच आय में कोई बड़ा अंतर नहीं मिला।

- हिमाचल प्रदेश में पारंपरिक किसानों की औसत सालाना आय 2,53,600 रुपए रही, जबकि प्राकृतिक किसानों की 2,52,453 रुपए।
- राजस्थान और आंध्र प्रदेश में पारंपरिक किसानों की आय क्रमशः 1,60,500 रुपए और 1,13,600 रुपए रही, जबकि प्राकृतिक खेती वालों की आय 1,49,533 रुपए और 98,093 रुपए रही।
- पश्चिम बंगाल और झारखंड में दोनों वर्गों की आय लगभग समान रही।

मृदा स्वास्थ्य व टिकाऊ खेती के लिए करें जैव उर्वरकों का प्रयोग

● अनिल कुमार सिंह ● सिद्धार्थ नायक
● ऋचा सिंह ● अक्षता तोमर
● दिनेश कुमार सिंह
कृषि विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
aksjnkvv01@gmail.com

जैव उर्वरक जीव आधारित खादें हैं। ये लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु वायुमण्डल में पहले से विद्यमान नाईट्रोजन को स्थिरीकृत कर फसल को उपलब्ध कराती हैं तथा मिट्टी में मौजूद अघुलनशील फास्फोरस को पानी में घुलनशील अवस्था में बदलकर पौधों को उपलब्ध कराती हैं। इस प्रकार रासायनिक खाद की आवश्यकता सीमित हो जाती है। जैव खाद के प्रयोग से 30 से 40 किलो ग्राम नाईट्रोजन प्रति हेक्टेयर भूमि को प्राप्त हो जाती है। जिससे फसलोत्पादन 10 से 20 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। अतः रासायनिक उर्वरकों को थोड़ा कम प्रयोग करके बदले में जैव उर्वरकों का प्रयोग करके फसलों की भरपूर उपज प्राप्त की जा सकती है। जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों की पूरक तो हैं ही साथ ही ये उनकी उपयोग क्षमता भी बढ़ाती हैं। फास्फोबैक्टीरिया और माइकोराइजा नामक जैव उर्वरक के प्रयोग से खेत में फास्फोरस की उपलब्धता में 20 से 30 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी होती है साथ ही साथ फास्फोरस प्रदायी जैव उर्वरक यथा स्यूडोमोनास, बेसिलस, माइकोराइजा भूमि में उपस्थित अघुलनशील स्फुर को घुलनशील व गतिशील अवस्था में लाने का कार्य करते हैं। मुख्यतः जैव उर्वरक दो प्रकार के होते हैं – नत्रजन स्थिरीकरण जैव उर्वरक तथा फास्फोरस घोलक जैव उर्वरक। इसके अतिरिक्त पोटैशियम व जिंक प्रदायी जैव उवर्रकों के प्रयोग से पोटैशियम व जिंक की उपलब्धता बढ़ती है व खेती की लागत भी कम होती है।

फसलों के लिये राइजोबियम जैव-उर्वरक

राइजोबियम दलहनी फसलों का जैव उर्वरक है। राइजोबियम जैव उवर्रक वातावरण की नाइट्रोजन को फसल के साथ सहभागिता/सहजीवी रूप में अवशोषित कर भूमि में स्थिर करते हैं। अंकुरण के उपरांत ये जीवाणु, पौधों की जड़ों में प्रविष्ट होकर छोटी-छोटी गांठों का निर्माण करते हैं और वायुमंडलीय नत्रजन को नाइट्रेट में परिवर्तित कर पौधों को उपलब्ध कराते हैं। इन जीवाणुओं का एक विशेष व्यवहार होता है, जिसके कारण विभिन्न प्रकार के दलहनी फसलों के लिये अलग-अलग प्रजाति के जीवाणु आवश्यक होते हैं। जीवाणु की एक प्रजाति जो किसी फसल में जड़ ग्रथियां बनाने में सक्षम है, वह दूसरी फसल में जड़ ग्रंथियां नहीं बना सकता।

खेती में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से उपज में वृद्धि तो होती है परंतु असंतुलित एवं अव्यवस्थित प्रयोग से मृदा की उर्वरता तथा संरचना पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिये रासायनिक उर्वरकों के साथ-साथ जैव उर्वरकों के प्रयोग की कृषि में सम्भावनायें बढ़ रही हैं। जैव उर्वरकों के प्रयोग से फसल को पोषक तत्वों की आपूर्ति होने के साथ मृदा उर्वरता भी स्थिर बनी रहती है तथा लागत भी कम लगती है। जैव उर्वरकों का प्रयोग रासायनिक उर्वरकों के साथ करने से रासायनिक उर्वरकों में निहित पोषक तत्वों की क्षमता बढ़ती है जिससे फसलोत्पादन में वृद्धि होती है।

एजोटोबैक्टर जैव उर्वरक

यह असहजीवी जीवाणु है जो पौधों की जड़ों की सतह में स्वतंत्र रुप से रहते हुये वायुमण्डलीय नत्रजन को नाइट्रेट में परिवर्तित कर पौधों को उपलब्ध कराते हैं। ये जीवाणु कुछ विशेष पादप वृद्धि नियामक पदार्थों जैसे-जिबरेलीन का स्त्राव करते हैं जो फसल की उत्पादकता बढ़ाने के साथ ही कुछ एण्टीबायोटिक रसायन उत्सर्जित करते हैं जिससे फसल में लगने वाले भूमि जन्य रोग व वायरस रोगों से फसल का बचाव होता है। एजोटोबैक्टर के उपयोग से 20-40 किग्रा नत्रजन प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष तक फसल को प्राप्त होती है।

नील हरित काई (शैवाल)

पानी की सतह पर नीले-हरे रंग की यह शैवाल, सूर्य प्रकाश में अपना भोजन स्वयं बनाकर, वायुमण्डल की नत्रजन को स्थिरीकरण कर पौधों को उपलब्ध कराती है। इनके द्वारा 20-30 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टेयर तक फसल को प्राप्त होती है जिससे 10-15 प्रतिशत उत्पादन में वृद्धि देखी गयी है। एक एकड़ खेत में 4 कि.ग्रा. सूखी नील-हरित शैवाल की आवश्यकता पड़ती है इसके विकास के लिये खेत में 7-8 से.मी. पानी भरा रहें।

फास्फोरस प्रदायी जैव उर्वरक (पीएसबी)

फास्फोरस प्रदायी जैव उर्वरक स्यूडोमोनास, बेसिलस, माइकोराइजा भूमि में उपस्थित अघुलनशील स्फुर को घुलनशील व गतिशील अवस्था में लाने का कार्य करते हैं। सामान्यतः स्फुर की पूर्ति हेतु प्रयोग होने वाले रासायनिक उर्वरकों जैसे-सुपर फास्फेट, डीएपी का केवल 20 प्रतिशत भाग ही घुलनशील अवस्था में परिवर्तित हो पाता है। स्फुर प्रदायी जैव उर्वरक, भूमि में उपस्थित 80 प्रतिशत अघुलनशील स्फुर को घुलनशील एवं गतिशील अवस्था में लाकर पौधों को उपलब्ध कराते हैं जिससे पौधों की वृद्धि व विकास अच्छा होने से उत्पादन में 8-10 प्रतिशत बढ़ोत्तरी होती है।

जैव उर्वरक का प्रयोग कैसे करें

बीज निवेशन (बीजोपचार)- 20 से 40 कि.ग्रा. बीज के लिये राइजोबियम का एक पैकेट (200 ग्राम) पर्याप्त है इस हेतु 50-100 ग्राम गुड़/शक्कर को 500 मिली पानी में घोल बनाकर उसे गर्म करते हैं व ठंडा कर इसमें जैव उर्वरक को घोलकर, बीज के साथ मिलायें। जब राइजोबियम व पीएसबी को एक साथ उपयोग करना हो तब राइजोबियम का एक पैकेट व पीएसबी के दो पैकेट उपयोग करें। बीज को छाया में सुखाकर उसी दिन बुवाई कार्य करें।

जड़ उपचार - जैविक खाद का प्रयोग जड़ोपचार हेतु रोपाई वाली फसलों में करते हैं। 4 किलोग्राम जैव उर्वरक का 20 -25 लीटर पानी में घोल बनायें। एक हेक्टेयर के लिये पर्याप्त पौध की जड़ों को 25-30 मिनट तक उपरोक्त घोल में डुबोकर रखें। उपचारित पौध को छाया में रखें तथा यथाशीघ्र रोपाई कर दें।

मृदा उपचार - एक हेक्टेयर भूमि के लिये 200 ग्राम वाले 25 पैकेट जैव उर्वरक की आवश्यकता पड़ती है। 50 किलोग्राम मिट्टी या 50 किलोग्राम कम्पोस्ट खाद में 5 किलोग्राम जैव उर्वरक को अच्छी तरह मिलायें। इस मिश्रण को एक हैक्टेयर क्षेत्रफल में बुआई के समय या बुआई से 24 घंटे पहले समान रूप से छिड़कें। इसे बुआई के समय कूड़ों में भी डाल सकते हैं।

जैव उर्वरकों के उपयोग में सावधानियां

● नाइट्रोजन जैव उर्वरकों के साथ फास्फोबैक्टीरिया का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी है। प्रत्येक दलहनी फसल के लिये अलग राइजोबियम कल्चर तैयार किये जाते हैं। अतः दलहनी फसल के अनुरूप ही राइजोबियम कल्चर क्रय कर प्रयोग करें।

● जैव उर्वरकों को धूप में कभी न रखें, यदि इसे कुछ दिनों के लिये रखना हो तो मिट्टी के घड़े का प्रयोग बहुत अच्छा है। ● फसल विशेष के अनुसार ही जैव उर्वरक का चुनाव करें। ● रासायनिक खाद तथा कीटनाशक दवाईयों से जैव उर्वरक को दूर रखें तथा इनका एक साथ प्रयोग भी न करें। ● जब बीज को फफूंदनाशक दवा से भी उपचारित करना हो तो पहले फफूंदनाशक से और फिर जैव उर्वरक से उपचारित करें। ● जैव उर्वरकों की अच्छी कार्यप्रणाली के लिये 20-35 सेण्टीग्रेड तापमान अनुकूल रहता है। परिवहन के दौरान इन्हें धूप से बचायें साथ ही पर्याप्त नमी होने पर ही खेत में उपयोग करें। ● जैव उर्वरकों का स्वजीवन 6 माह का होता है अतः प्रभाव समाप्ति अवधि के पूर्व ही फसल अनुसार उपयोग करें। ● अम्लीय भूमियों में प्रयोग के लिये उपचारित बीजों पर चूना, डोलोमाइट अथवा सुपर फास्फेट का लेप चढ़ा दें। क्षारीय भूमि में बीजों पर जिप्सम की पर्त चढ़कर बोनी करें।

पोटैशियम प्रदायी जैव उर्वरक (केएसबी)

पोटैशियम प्रदायी जैव उर्वरक भूमि में उपस्थित अघुलनशील पोटैशियम को घुलनशील अवस्था में लाने का कार्य करते हैं। सामान्यतः पोटैशियम की पूर्ति हेतु प्रयोग होने वाले रासायनिक उर्वरकों जैसे- म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी), सल्फेट ऑफ पोटाश (एसओपी) का 50 से 60 प्रतिशत भाग ही घुलनशील अवस्था में परिवर्तित हो पाता है। पोटैशियम प्रदायी जैव उर्वरक, भूमि में उपस्थित 40 से 50 प्रतिशत अघुलनशील पोटैशियम को घुलनशील अवस्था में लाकर पौधों को उपलब्ध कराते हैं जिससे पौधों की वृद्धि व विकास अच्छा होने से उत्पादन में 20-25 प्रतिशत बढ़ोत्तरी होती है।

जिंक प्रदायी जैव उर्वरक (जेडएसबी)

जिंक प्रदायी जैव उर्वरक भूमि में उपस्थित अघुलनशील जिंक को घुलनशील व गतिशील अवस्था में लाने का कार्य करते हैं। सामान्यतः जिंक की पूर्ति हेतु प्रयोग होने वाले रासायनिक उर्वरकों जैसे- जिंक सल्फेट का 5 से 10 प्रतिशत भाग ही घुलनशील अवस्था में परिवर्तित हो पाता है। जिंक प्रदायी जैव उर्वरक, भूमि में उपस्थित अघुलनशील जिंक को घुलनशील अवस्था में लाकर पौधों को उपलब्ध कराते हैं जिससे पौधों की वृद्धि व विकास अच्छा होने से उत्पादन में 10-15 प्रतिशत बढ़ोत्तरी होती है।

जैव उर्वरकों के प्रयोग से लाभ

● ये अन्य रासायनिक उर्वरकों से सस्ते होते हैं जिससे फसल उत्पादन की लागत घटती है। ● जैव उर्वरकों के प्रयोग से नाईट्रोजन, घुलनशील फास्फोरस, पोटैशियम व जिंक आदि की फसल के लिये उपलब्धता बढ़ती है। ● इससे रासायनिक खाद का प्रयोग कम हो जाता है जिससे भूमि की मृदा संरचना अच्छी बनी रहती है। ● जैव उर्वरक से पौधों में वृद्धिकारक हारमोन्स उत्पन्न होते हैं जिनसे उनकी बढ़वार पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। ● जैव उर्वरक से फसल में मृदाजन्य रोग नहीं होते हैं। ● जैविक खाद से खेत में लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है।

● जैविक खाद से मृदा तथा पर्यावरण सुरक्षित रहता है।

● अम्लीय और क्षारीय भूमियों का सुधार होता है।

विभिन्न जैव उर्वरक, मात्रा एवं संस्तुत प्रयोग विधि

जैव उर्वरक	उपयुक्त फसलें	संस्तुत प्रयोग विधि	आवश्यक मात्रा
राइजोबियम एजोटोबैक्टर	सभी दलहनी फसलों के लिये	बीजोपचार	200 ग्राम प्रति 10-15 किग्रा बीज
	दलहनी फसलों को छोड़कर अन्य सभी फसलों के लिये	बीजोपचार, जड़ उपचार, व मृदा उपचार	200 ग्राम प्रति 10-15 किग्रा बीज या 5 किग्रा प्रति हेक्टेयर
एसिटोबैक्टर	केवल गन्ने के लिये	बीजोपचार, व मृदा उपचार	200 ग्राम प्रति 10-15 किग्रा बीज या 5 किग्रा प्रति हेक्टेयर
एजोस्पिरिलम	दलहनी फसलों को छोड़कर अन्य सभी फसलों के लिये, गन्ने के लिये विशेष उपयोगी	बीजोपचार, जड़ उपचार,व मृदा उपचार	200 ग्राम प्रति 10-15 किग्रा बीज या 5 किग्रा प्रति हेक्टेयर
फास्फोबैक्टीरिया	सभी फसलों के लिये	बीजोपचार, जड़ उपचार व मृदा उपचार	200 ग्राम प्रति 10-15 किग्रा बीज या 5 किग्रा प्रति हेक्टेयर
माइकोराइजा	सभी फसलों के लिये	मृदा उपचार	5-7 किग्रा प्रति हेक्टेयर
पोटैशियम घोलक जीवाणु	सभी फसलों के लिये	मृदा उपचार	2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर
जिंक घोलक जीवाणु	सभी फसलों के लिये व मृदा उपचार	बीजोपचार, जड़ उपचार	100 मिली प्रति 10-15 किग्रा बीज या 1-2 किग्रा प्रति हेक्टेयर
नील हरित शैवाल	मृदा उपचार धान फसल के लिये		10-12 किग्रा प्रति हेक्टेयर

विभिन्न फसलों हेतु उपयोगी राइजोबियम प्रजातियां

राइजोबियम की प्रजाति	फसल
राइजोबियम लेग्युमिनोसेरम	मटर, मसूर एवं खेसारी
राइजोबियम फेसियोलाई	राजमा
राइजोबियम ट्राईफोलाई	बरसीम
राइजोबियम ल्यूपिनी ल्यूपिन	वार्षिक एवं बहुवार्षिक
राइजोबियम मिलिलोटाई	लूर्सन, मेथी एवं स्वीट क्लोवर
राइजोबियम स्पेसीज	लोबिया, चना, मोथ, कुल्थी

राइजोबियम प्रजातियों द्वारा दलहनी फसलों में नत्रजन स्थिरीकरण की मात्रा

दलहनी फसलें	नत्रजन स्थिरीकरण (किग्रा/हे.)
अरहर	70-200
ढेंचा	100-120
उड़द-मूंग	70-90
लोबिया	80-85
सोयाबीन	65-120
चना	80-100
मटर	52-77
मसूर	90-100

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

फलों में पोषक तत्वों का मूल्यांकन

● उपेन्द्र यादव ● हंस राज वर्मा
शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
● विवेक यादव
एमएससी छात्र, फल विज्ञान विभाग
चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उप्र)
upendray123123@gmail.com

फलों के पौधों के लिए अपनाई जाने वाली प्रबंधन प्रणाली, विशेषकर पोषक तत्वों के संबंध में, खेत की फसलों के लिए अपनाई गई प्रबंधन प्रणाली से काफी भिन्न होती है। पेड़ के आकार के आधार पर प्रबंधन प्रणाली में बदलाव रोपण के 3-4 साल बाद शुरू किया जा सकता है। फूल आने और फल लगने के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है, साथ ही पेड़ों को बढ़ने और अगले वर्षों में उच्च पैदावार देने के लिए पर्याप्त शक्ति बनाए रखने के लिए भी आवश्यक होता है। लंबे समय तक पेड़ों की उत्पादकता बनाए रखने और पौधों की उत्पादन क्षमता की स्थिरता बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों का उपयोग मिट्टी में पोषक तत्वों की वास्तविक आवश्यकता और उपलब्धता पर आधारित होना

चाहिए। पौधों में पोषक तत्वों का किफायती ढंग से सही समय पर सही मात्रा में उपयोग इस प्रकार किया जाता है कि पौधों द्वारा पोषक तत्वों को कम से कम नुकसान के साथ कुशलतापूर्वक ग्रहण किया जा सके। फलों के पौधों की पोषक तत्वों की आवश्यकता के आकलन का उद्देश्य पौधों में खनिज पोषक तत्वों के स्तर को वांछित सीमा में बनाए रखना है ताकि पेड़ों की वृद्धि, विकास और वांछित फलन प्राप्त हो सके।

मिट्टी में पोषक तत्वों की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारक

- वनस्पति आवरण का प्रकार; जैसे दलहनी फसलों के साथ नाइट्रोजन अधिक होता है
- खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग
- मृदा संशोधन का अनुप्रयोग
- मिट्टी की विरासत स्थिति

पत्ती में पोषक तत्वों की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारक

- उर्वरक का प्रयोग
- वनस्पति आवरण का प्रकार; जैसे फलियां कवर के साथ नाइट्रोजन अधिक हो सकता है।
- पेड़ में निहित कारक; आनुवंशिक संरचना, पौधे की उम्र, नमूना लेने का समय; वार्षिक (मौसमी) भिन्नता, पत्तियों की आयु, पत्तियों की स्थिति।

पत्तियों के नमूने

फलों के पेड़ों की पोषण संबंधी आवश्यकता का अनुमान लगाने के लिए पत्ती विश्लेषण एक महत्वपूर्ण प्रक्रम है। पत्ती में पोषक तत्वों का उचित विश्लेषण पत्तियों के ऊतकों का विश्लेषण करके प्राप्त की जा सकता है। इसके बाद पोषक तत्वों की पूर्ति उनकी कमी इष्टतम मानदंडों के अनुसार पौधो को प्रदान की जाती है।

फलों की फसलों के लिए पौधों के ऊतकों के नमूने के दिशा निर्देश

फल	सूचकांक ऊतक	वृद्धि चरण
अंगूर	आधार से 5वाँ डंठल	उपज पूर्वानुमान के लिए कली विभेदन चरण, डंठल
केला	शीर्ष से तीसरी खुली पत्ती का डंठल	कली विभेदन चरण
शरीफा	शीर्ष से पाँचवाँ पत्ता	नई वृद्धि के 2 महीने बाद
अंजीर	पूरी तरह से विस्तारित पत्तियां, मध्य शूट वर्तमान विकास	जुलाई-अगस्त
अमरूद	हाल ही में पकी पत्तियों का तीसरा जोड़ा	खिलने की अवस्था
नींबू	नई फ्लश से 3 से 5 महीने पुरानी पत्ती, अंकुर का पहला पत्ता	जून
आम	पत्तियां डंठल	अंकुर के बीच से 4 से 7 महीने पुरानी पत्तियाँ
अनार	शीर्ष से आठवीं पत्ती	कली विभेदन, फरवरी की फसल के लिए अप्रैल में और जून की फसल के लिए अगस्त में
पपीता	शीर्ष से छठा डंठल	रोपण के 6 महीने बाद
फालसा	शीर्ष से चौथा पत्ता	छंटाई के एक महीने बाद
बेर	द्वितीयक या तृतीयक प्ररोह के शीर्ष से 16वीं पत्ती	छंटाई के दो महीने बाद
चीकू	शीर्ष से 10वीं पत्ती	सितम्बर

बागवानी फसलों के लिए इष्टतम मानदंड

पोषक तत्व	अंगूर (थॉमसन बीजरहित)	आम (तोतापुरी)	कागज़ी नींबू	अनार	केला (रोबूस्टा)
नाइट्रोजन (%)	0.87-1.61	0.84-1.53	1.53-2.10	0.91-1.66	1.67-3.43
फास्फोरस (%)	0.29-0.65	0.64-0.15	0.10-0.15	0.12-0.18	0.12-0.21
पोटेशियम (%)	2.0-3.0	0.52-1.10	0.96-1.66	0.61-1.59	2.28-4.14
कैल्शियम (%)	0.98-1.36	1.97-3.20	3.05-3.43	0.77-2.00	0.48-1.70
मैग्नीशियम (%)	0.63-1.10	0.40-0.65	0.40-0.60	0.16-0.42	0.33-0.58
सल्फर (%)	0.09-0.13	0.15-0.22	0.25-0.29	0.16-0.26	0.03-0.18
आयरन (पीपीएम)	54-80	48-86	117-194	71-214	53-196
मैंगनीज (पीपीएम)	42-209	57-174	21-63	29-89	112-417
जिंक (पीपीएम)	30-88	25-33	25-50	14-72	8-38
कॉपर (पीपीएम)	5-10	3.1-8.0	8.7-14.8	29-72	10-32

मिट्टी की सेहत बचाएं, खेत की उपज बढ़ाएं

● श्रीयांशु राठौर, shriyanshurathore2002@gmail.com

मिट्टी बचेगी तभी खेती टिकेगी

किसानों भाइयों और बहनों,

हमारी खेती की असली ताकत मिट्टी है। मिट्टी नहीं तो अनाज नहीं। लेकिन आज लगातार ज्यादा जुताई, रासायनिक खाद का अत्यधिक उपयोग, पेड़ों की कटाई और बारिश का बहाव हमारी मिट्टी को खराब कर रहा है।

जिस जमीन से हम रोज़ी-रोटी कमाते हैं, वही अगर कमजोर हो जाए, तो हमारी खेती भी कमजोर हो जाएगी। इसीलिए आज सबसे जरूरी है - मृदा संरक्षण यानी मिट्टी की रक्षा।

मिट्टी बिगाड़ने वाले काम

- बार-बार खेत को जोतना
- सिर्फ एक ही फसल बार-बार लगाना
- जरूरत से ज्यादा रासायनिक खाद डालना
- पेड़-पौधे काट देना
- बिना योजना के सिंचाई करना

मिट्टी बचाने के आसान उपाय

फसल चक्र अपनाएं: गेहूं के बाद दलहनी फसलें (जैसे मूंग, उड़द) लगाएं। इससे मिट्टी में नाइट्रोजन बढ़ता है।

जैविक खाद डालें: गोबर की खाद, कंपोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट से मिट्टी की ताकत बढ़ती है।

पौधे लगाएं (वनरोपण): खेत की मेड़ों पर पेड़ और झाड़ियाँ लगाएं। इससे

मिट्टी बहती नहीं है।

सीढ़ीनुमा खेती : पहाड़ी या ढलान वाले इलाकों में यह तरीका बहुत कारगर है।

कंटूर नाली बनाएं: पानी को सीधे नीचे बहने से रोकें। इससे मिट्टी नहीं बहती और जल भी बचता है।

मिट्टी की जांच कराएं: 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना' के तहत सरकार मुफ्त में मिट्टी की जांच करवाती है।

सरकार से मदद कैसे लें?

कृषि विभाग से संपर्क करें - अपने जिले के कृषि अधिकारी से सलाह लें।

कृषि विज्ञान केंद्र - हर जिले में मौजूद हैं। वहां से मृदा संरक्षण पर प्रशिक्षण मिल सकता है।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना - इस योजना के तहत हर किसान को बताया जाता है कि उसकी जमीन में कौन-कौन से पोषक तत्व कम हैं।

लेखक की बात

मिट्टी हमारी माँ है। माँ को बीमार नहीं होने देना है। अगर आज से हम मृदा संरक्षण शुरू करें, तो हमारी आने वाली पीढ़ियों को उपजाऊ ज़मीन मिलेगी।

तो आइए, हम सब मिलकर मिट्टी की रक्षा करें और खेती को समृद्ध बनाएं।

पोल्ट्री में कूड़ा प्रबंधन

कूड़ा प्रबंधन टिकाऊ पोल्ट्री उत्पादन की आधारशिला है, जिसका सीधा प्रभाव पक्षियों के स्वास्थ्य, पर्यावरण सुरक्षा और सामुदायिक स्वीकृति पर पड़ता है। पोल्ट्री उत्पादकों के सामने आने वाली कई चुनौतियों में से, मक्खियों का प्रकोप और लगातार आने वाली दुर्गंध को नियंत्रित करना सबसे कठिन है। ये समस्याएँ न केवल फार्म की स्वच्छता को प्रभावित करती हैं, बल्कि रोग संचरण, नियामक जाँच और पड़ोसी समुदायों के साथ तनावपूर्ण संबंधों का जोखिम भी पैदा करती हैं। हालाँकि भौतिक और रासायनिक हस्तक्षेपों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, लेकिन उनकी सीमाएँ तेज़ी से स्पष्ट होती जा रही हैं, जिससे अधिक समग्र समाधानों की आवश्यकता बढ़ रही है।

समस्या का पैमाना

लेयर फ़ार्म में, खाद लंबे समय तक जमा होती रहती है। उच्च कार्बनिक तत्व, नमी और गर्मी के साथ मिलकर, सूक्ष्मजीवों के अपघटन के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करते हैं। इस अपघटन से अमोनिया और वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (VOCs) निकलते हैं, जिससे विशिष्ट गंध उत्पन्न होती है। साथ ही, खाद मक्खियों, विशेष रूप से घरेलू मक्खी (मस्का डोमेस्टिका) के लिए प्रजनन स्थल बन जाती है, जो नम कूड़े में पनपती है।

ये मक्खियाँ केवल एक उपद्रव ही नहीं हैं- ये साल्मोनेला, ई. कोलाई और कैम्पिलोबैक्टर जैसे रोगजनकों के लिए यांत्रिक वाहक का काम करती हैं। इस बीच, गंध उत्सर्जन न केवल फ़ार्म की हवा की गुणवत्ता को कम करता है, बल्कि आस-पास के समुदायों की शिकायतों को भी बढ़ाता है, जो अक्सर नियामक चुनौतियों का कारण बनता है।

हस्तक्षेप और उनकी सीमाएँ

उत्पादक लंबे समय से भौतिक हस्तक्षेपों पर निर्भर रहे हैं, जैसे-

- प्रजनन सामग्री को कम करने के लिए बार-बार खाद हटाना।
- गंध को दूर करने और कूड़े को सूखा रखने के लिए वेंटिलेशन सिस्टम।
- यांत्रिक टर्नर का उपयोग करके कूड़े को सुखाना और वातन करना।
- वयस्क मक्खियों की आबादी को कम करने के लिए जाल।

हालाँकि ये उपाय अस्थायी राहत प्रदान करते हैं, लेकिन वास्तविक परिस्थितियों में ये अक्सर विफल हो जाते हैं। उदाहरण के लिए-

- बार-बार खाद हटाना श्रमसाध्य और महंगा है, खासकर बड़े पैमाने पर संचालन में।
- वेंटिलेशन गंध को दूर करता है लेकिन इसके स्रोत को खत्म नहीं करता है।
- यांत्रिक सुखाने का काम असंगत है, खासकर आर्द्र या बरसात के मौसम में।
- जाल और जाल वयस्कों की संख्या को कम करते हैं लेकिन मूल कारण कूड़े में मक्खियों का प्रजनन को संबोधित नहीं करते हैं।

रासायनिक हस्तक्षेप और उनकी कमियाँ

कीटनाशक, लार्वानाशक, कीटाणुनाशक और कूड़े में सुधार जैसे रासायनिक हस्तक्षेप, पोल्ट्री अपशिष्ट प्रबंधन में आम उपकरण हैं। हालाँकि, उनकी सीमाएँ तेजी से पहचानी जा रही हैं-

- मक्खियों की आबादी में कीटनाशक प्रतिरोध तेज़ी से विकसित होता है, जिससे समय के साथ उनकी प्रभावशीलता कम होती जाती है।
- रासायनिक अवशेष कूड़े को दूषित कर सकते हैं, जिससे फसल के उपयोग या खाद बनाने में चिंताएँ पैदा हो सकती हैं।
- फिटकरी या चूने जैसे अमोनिया-बाध्यकारी रसायन अस्थायी रूप से गंध को कम कर सकते हैं, लेकिन इन्हें बार-बार इस्तेमाल करने की आवश्यकता होती है, जिससे लागत बढ़ जाती है।
- रसायनों पर अत्यधिक निर्भरता कूड़े के सूक्ष्मजीवी संतुलन को बिगाड़ सकती है, जिससे कभी-कभी गंध की उत्पत्ति और भी बदतर हो जाती है।

इसके अलावा, रासायनिक अवशेषों और स्थायित्व से जुड़ी पर्यावरणीय और उपभोक्ता चिंताएँ, खेतों को इन तरीकों पर पूरी तरह निर्भर रहने से दूर जाने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

आवर्ती मक्खी चक्र : लार्वा नियंत्रण क्यों महत्वपूर्ण है

मक्खियाँ अपने तेज़ और आवर्ती जीवन चक्र के कारण लगातार जीवित रहती हैं। एक घरेलू मक्खी नम खाद पर सैकड़ों अंडे दे सकती है, जो 24 घंटे के भीतर लार्वा (मैगॉट्स) में बदल जाते हैं। ये लार्वा अनुकूल परिस्थितियों में 10 दिनों से भी कम समय में प्यूपा बन जाते हैं और वयस्क बन जाते हैं। जब तक कूड़ा नमी, गर्मी और पोषक तत्व प्रदान करता रहता है, यह चक्र अनवरत चलता रहता है।

केवल वयस्क मक्खियों को लक्षित करना एक अल्पकालिक रणनीति है। यदि वयस्कों को भी नष्ट कर दिया जाए, तो कुछ ही दिनों में नई पीढ़ियाँ उभर आती हैं, जिससे संक्रमण फिर से फैल जाता है। मक्खियों को नियंत्रित करने का एकमात्र स्थायी तरीका लार्वा अवस्था में ही इस चक्र को तोड़ना है। कूड़े को सुखाने, पोषक तत्वों को स्थिर करने, या लार्वा के विकास को सीधे दबाने वाले हस्तक्षेप मक्खियों की आबादी को उनके स्रोत पर ही नाटकीय रूप से कम कर सकते हैं। लार्वा पर ध्यान केंद्रित करके, उत्पादक जाल और कीटनाशकों से वयस्क मक्खियों का लगातार पीछा करने के बजाय भविष्य में होने वाले प्रकोपों को रोक सकते हैं।

वर्तमान दृष्टिकोण अपर्याप्त क्यों हैं?

मक्खियों और दुर्गंध की समस्याओं का बने रहना एक महत्वपूर्ण बात को उजागर करता है- भौतिक और रासायनिक हस्तक्षेप मुख्यतः लक्षणों को संबोधित करते हैं, कारणों को नहीं। मक्खियाँ इसलिए बढ़ती हैं क्योंकि गोबर पोषक तत्वों से भरपूर और उनके जीवन चक्र को बनाए रखने के लिए पर्याप्त नम रहता है। दुर्गंध इसलिए बनी रहती है क्योंकि यूरिक एसिड और प्रोटीन का सूक्ष्मजीवी विघटन अनियंत्रित रूप से जारी रहता है। जब तक कूड़ा जैविक रूप से अस्थिर रहेगा, बार-बार हस्तक्षेप के बावजूद ये समस्याएँ फिर से उभरती रहेंगी।

सतत प्रबंधन की ओर बढ़ना

वर्तमान रणनीतियों की सीमाएँ एकीकृत, जीव-केंद्रित दृष्टिकोणों की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं जो खाद को स्रोत पर ही स्थिर कर सकें। कूड़े में सूक्ष्मजीवी गतिविधि और पोषक तत्वों की गतिशीलता को संशोधित करके, यह संभव हो जाता है-

- अमोनिया उत्सर्जन और गंध निर्माण को कम करना।
- मक्खी प्रजनन के लिए अनुकूल परिस्थितियों को सीमित करना।
- कूड़े के मूल्य को एक सुरक्षित, पोषक तत्वों से भरपूर जैविक उर्वरक के रूप में बेहतर बनाना।

ऐसे दृष्टिकोण न केवल दीर्घकालिक परिणाम प्रदान करते हैं, बल्कि पोल्ट्री उद्योग के स्थायित्व, जैव सुरक्षा और चक्रीय अर्थव्यवस्था प्रथाओं की ओर बढ़ने के प्रयासों के अनुरूप भी हैं।

कृषक जगत राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर द्वारा प्रकाशित फसल पुस्तक श्रृंखला

नाम ..... ग्राम.....
पोस्ट ..... तह. ..... जिला.....
फोन/मोबा. .....कुल राशि.....
ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या/संलग्न ड्रॉफ्ट नं. .....
मनी ऑर्डर क्र. ..... वी.पी. भेजें।

नोट : कृपया ड्राफ्ट या मनीऑर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम नीचे लिखे पते पर भेजें

प्रधान कार्यालय : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011
फोन: 0755-4248100,2554864, मो. : 9826255861
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर
मो. : 09826021837

ड्रिप

समस्या : ड्रिप सिंचाई क्या है?

समाधान : ड्रिप सिंचाई को ट्रिकल अथवा सूक्ष्म सिंचाई भी कहा जाता है और यह सर्वाधिक प्रभावी तकनीक है जिसमें फसल उत्पादन के लिए जल, उर्वरकों तथा अन्य पोषक तत्वों का कहीं अधिक प्रभावी उपयोग किया जाता है। इसका मुख्य सिद्धान्त खेत में प्लास्टिक पाइप पर लगाये गये इमीटर्स की मदद से यथा संभव पौधे की जड़ के निकट जल तथा निवेशों का धीरे-धीरे, निरन्तर और बार-बार प्रयोग करना है।

लेजर लैण्ड लेवलिंग

समस्या : लेजर लैण्ड लेवलिंग के क्या लाभ हैं?

समाधान : जल अनुप्रयोग प्रभावशीलता में सुधार लाने और फसल की पैदावार को बढ़ाने में लेजर लैण्ड लेवलिंग एक आदर्श हस्तक्षेप है। वर्ष 2008 के दौरान कृषि विभाग के योजना तथा मूल्यांकन सेल द्वारा किए गए प्रभाव आकलन अध्ययन में इसके निम्नलिखित प्रभाव पाए गए :-सिंचाई के समय में 25.1 से 32.1 प्रतिशत तक की बचत। सिंचित क्षेत्रफल में 34.5 से 42.0 प्रतिशत तक की वृद्धि। फसल पैदावार में 10.7 से 12.9 प्रतिशत तक का सुधार। फार्म संवर्धन योग्य बंजर भूमि में 2.10 प्रतिशत तक की कमी। फसल को बेहतर ढंग से खड़े होने, एक समान नमी उपलब्धता और बढ़ी हुई उर्वरक उपयोग प्रभावशीलता की सुविधा।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

सरसों

समस्या : सरसों की फसल में माहो के प्रकोप को कैसे नियंत्रित करें?

समाधान : सरसों में चेपा या माहू का प्रकोप दिसम्बर से जनवरी के माह में बादल वाले मौसम में अधिक होता है। इससे बचाव के लिए सरसों की बुआई मध्य अक्टूबर तक अवश्य करें। इससे फसल पर चेपा का कम प्रकोप होगा। यदि फिर भी प्रकोप होता है तो मैलाथियान दवा की एक लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 400-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

पपीता

समस्या : पपीते के बाग में नर-मादा पौधों को कैसे पहचाना जा सकता है?

समाधान : फूल निकलने से पहले नर और मादा पौधों को पहचाना नहीं जा सकता है। फूल निकलने के बाद पहचान यह है कि नर फूल लम्बी-लम्बी टहनियों (फूल वाली) के ऊपर अनेक संख्या में गुथे होते हैं। इस प्रकार की फूलों वाली टहनियां पत्तियां हैं। मादा फूल पत्तियों की काखों से अकेला-अकेला निकलता हैं और इसमें फल नुमा फूला हुआ भाग होता है।

पशु बीमा

समस्या : मेरे पास लगभग 35 पशु हैं,

बीमा कराना चाहता हूं, मार्गदर्शन दें।

समाधान : पशुओं का बीमा 4 सरकारी बीमा कंपनियां नेशनल इंश्योरेंस कंपनी, दिनयू इंडिया इंश्योरेंस कंपनी, ओरियंटल इंश्योरेंस कंपनी तथा यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी करती है। जब भी कोई पशुपालक सरकारी योजना के अंतर्गत पशु खरीदता है तो उस पशु का बीमा उसी समय किया जाता है परंतु यदि कोई पशुपालक बगैर योजना के पशु रखता है तब उसे क्षेत्र के पशुचिकित्सक से पशुओं का स्वास्थ्य प्रमाण पत्र बनवाकर बीमा कंपनी में जमा कराना पड़ता है। पशु की कीमत का लगभग 3 प्रतिशत प्रीमियम कंपनी लेकर पशु का एक साल के लिए बीमा कर देती है। पशु के कान में कंपनी का टेग डाल दिया जाता है। पशु की मृत्यु होने पर पशुपालक को बीमा कंपनी में सूचना देनी होती है तथा पशु चिकित्सक से पोस्टमार्ट्म कराना होता है। दावा करने के बाद पशुपालक को बीमित राशि का भुगतान हो जाता है।

मूली

समस्या : सालभर क्या मूली की खेती करना संभव है, तकनीकी बतायें?

समाधान : विभिन्न मौसम में उगाई जाने

वाली मूली की उन्नत किस्में, किस्म, बुआई का समय फसल तैयार होने का समय, उपज, पूसा देसी अगस्त के मध्य से अक्टूबर मध्य तक, मध्य सितम्बर से मध्य दिसम्बर तक, पूसा मृदुला सितम्बर के प्रथम पखवाड़े से मध्य नवम्बर तक अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े से जनवरी के पहले खवाड़े तक, जेपनीज़ व्हाइट, पूसा स्वेता, पूसा जामुनी, पूसा गुलाबी दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े से फरवरी तक मध्य फरवरी से अप्रैल के तीसरे सप्ताह तक, पूसा चेतकी अप्रैल के पहले सप्ताह से मध्य अगस्त तक मई के पहले पखवाड़े से सितम्बर के दूसरे पखवाड़े तक इन किस्मों को सालभर लगाया जा सकता है।

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____

ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____

जिला _____ फोन/मोबा. _____

कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____

संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी आर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य

अक्षर नहीं पहचान पाना आंखों में रोग का संकेत

बच्चा अगर पढ़ने के दौरान अक्षरों को पहचानने में बार–बार गलती करता है तो इसके लिये उसकी आंखें जिम्मेवार हो सकती हैं। एक नए अध्ययन से पता चला है कि आंखों में खराबी के कारण अक्षरों को पहचानने में समस्या आती है।

शोधकर्ताओं ने कहा कि जब कोई बच्चा अक्षरों को सही–सही नहीं पहचान पाता तब इसको उसकी सीखने–समझने की क्षमता की कमी समझा जाता है। यह भी माना जाता है कि पढ़ने में दिलचस्पी नहीं होने के कारण वह ऐसा करता है। पर अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि यह समस्या केवल दिमागी विकास की कमी या पढ़ाने में रुचि न लेने की आदत का नतीजा नहीं है। शोधकर्ताओं ने पाया कि अक्षर पहचानने में होने वाली परेशानी में मस्तिष्क की भूमिका ही नहीं होती। इसके लिए आंखें जिम्मेदार होती हैं, जो किसी वस्तु का प्रतिबिंब बना उसको मस्तिष्क तक पहुंचाती हैं। जब आंखें गलत प्रतिबिंब बनाती हैं तब मस्तिष्क वस्तु का वास्तविक पहचान नहीं कर पाता।

वैज्ञानिकों के मुताबिक इंसान की दोनों आंखों की कोशिकाओं की बनावट भी अलग–अलग होती है। आम तौर पर इंसान की एक आंख ज्यादा, जबकि दूसरी आंख कम प्रभावशाली होती है। प्रभावशाली आंख में कोशिकाओं की बनावट गोलाकार होती है, जबकि दूसरी आंख की बनावट अंडाकार होती है। यही कारण है कि प्रभावशाली आंखें हमेशा सटीक तस्वीर मुहैया कराती हैं।

डिसलेक्सिया दिमागी बीमारी नहीं

डिसलेक्सिया को दिमागी बीमारी के रूप में देखा जाता है। इस बीमारी से पीड़ित बच्चा मानसिक रूप से अस्वस्थ होता है। पर नए अध्ययन के मुताबिक, यह मस्तिष्क से नहीं, बल्कि आंखों की कोशिकाओं से जुड़ी बीमारी है। रॉयल सोसायटी के जर्नल में छपे अध्ययन के मुताबिक, बच्चों में इस बीमारी के लिये उनकी आंखों की पुतली यानी रेटिना के भीतर की कोशिकाओं का असामान्य आकार जिम्मेवार हो सकता है।

दोनों आंखों का एक समान होना खतरनाक

जिन लोगों में डिसलेक्सिया होता है उनकी दोनों आंखों की कोशिकाओं की बनावट एक जैसी होती है। ये गोलाकार भी हो सकती है और अंडाकार भी। ऐसे में दोनों आंखों में प्रभावशाली होने की होड़ सी लगी रहती है। इस होड़ के चलते मस्तिष्क असमंजस में पड़ जाता है कि वह किस आंख की बनाई प्रतिबिंब ले और उसे आगे पहुंचाएं। शोधकर्ताओं के अनुसार, दोनों आंखों की इसी लड़ाई के चलते मस्तिष्क अक्षरों की सही जानकारी भी हासिल नहीं कर पाता, जिसके कारण अक्षर उलटे–पुलटे दिखाई पड़ते हैं।

स्वास्थ्य संबंधी जानकारी

- RO का पानी कभी ना पियें यह गुणवत्ता को स्थिर नहीं रखता। कुएँ का पानी पियें। बारिस का पानी सबसे अच्छा, पानी की सफाई के लिए सहिजन की फली सबसे बेहतर है।
- सोकर उठते समय हमेशा दायीं करवट से उठें या जिधर का स्वर चल रहा हो उधर करवट लेकर उठें।
- पेट के बल सोने से हर्निया, प्रोस्टेट, एपेंडिक्स की समस्या आती है।
- भोजन के लिए पूर्व दिशा, पढ़ाई के लिए उत्तर दिशा बेहतर है।
- HDL बढ़ने से मोटापा कम होगा LDL व VLDL कम होगा।
- गैस की समस्या होने पर भोजन में अजवाइन मिलाना शुरू कर दें।
- चीनी के अन्दर सल्फर होता जो कि पटाखों में प्रयोग होता है, यह शरीर में जाने के बाद बाहर नहीं निकलता है। चीनी खाने से पित्त बढ़ता है।
- शुक्रोज हजम नहीं होता है फ्रेक्टोज हजम होता है और भगवान की हर मीठी चीज में फ्रेक्टोज है ।
- वात के असर में नींद कम आती है।
- कफ के प्रभाव में व्यक्ति प्रेम अधिक करता है।
- कफ के असर में पढ़ाई कम होती है।
- पित्त के असर में पढ़ाई अधिक होती है।
- आँखों के रोग-कैट्रेक्टस, मोतियाबिंद, ग्लूकोमा, आँखों का लाल होना आदि ज्यादातर रोग कफ के कारण होता है।
- शाम को वात-नाशक चीजें खानी चाहिए।
- प्रात: 4 बजे जाग जाना चाहिए ।
- सोते समय रक्त दबाव सामान्य या सामान्य से कम होता है ।
- व्यायाम - वात रोगियों के लिए मालिश के बाद व्यायाम, पित्त वालों को व्यायाम के बाद मालिश करनी चाहिए। कफ के लोगों को स्नान के बाद मालिश करनी चाहिए।
- भारत की जलवायु वात प्रकृति की है, दौड़ की बजाय सूर्य नमस्कार करना चाहिए।
- जो माताएं घरेलू कार्य करती हैं उनके लिए व्यायाम जरुरी नहीं।
- निद्रा से पित्त शांत होता है, मालिश से वायु शांति होती है, उल्टी से कफ शांत होता है तथा उपवास से बुखार शांत होता है।
- भारी वस्तुयें शरीर का रक्तदाब बढ़ाती है, क्योंकि उनका गुरुत्व अधिक होता है।
- दुनिया के महान वैज्ञानिक का स्कूली शिक्षा का सफर अच्छा नहीं रहा, चाहे वह 8 वीं फेल न्यूटन हों या 9वीं फेल आइस्टीन हों।
- माँस खाने वालों के शरीर से अम्ल-स्राव करने वाली ग्रंथियाँ प्रभावित होती हैं।
- तेल हमेशा गाढ़ा खाना चाहिए सिर्फ लकड़ी वाली घाणी का, दूध हमेशा पतला पीना चाहिए।
- छिलके वाली दाल-सब्जियों से कोलेस्ट्रोल हमेशा घटता है।
- कोलेस्ट्रोल की बढ़ी हुई स्थिति में इन्सुलिन खून में नहीं जा पाता है। ब्लड शुगर का सम्बन्ध ग्लूकोस के साथ नहीं अपितु कोलेस्ट्रोल के साथ है।
- मिर्गी दौरे में अमोनिया या चूने की गंध सूँघानी चाहिए।
- सिरदर्द में एक चुटकी नौसादर व अदरक का रस रोगी को सुंघायें।
- भोजन के पहले मीठा खाने से बाद में खट्टा खाने से शुगर नहीं होता है।
- भोजन के आधे घंटे पहले सलाद खाएं उसके बाद भोजन करें।
- अवसाद में आयरन, कैल्शियम, फास्फोरस की कमी हो जाती है। फास्फोरस गुड़ और अमरुद में अधिक है।
- पीले केले में आयरन कम और कैल्शियम अधिक होता है। हरे केले में कैल्शियम थोड़ा कम लेकिन फास्फोरस ज्यादा होता है तथा लाल केले में कैल्शियम कम आयरन ज्यादा होता है। हर हरी चीज में भरपूर फास्फोरस होती है, वही हरी चीज पकने के बाद पीली हो जाती है जिसमे कैल्शियम अधिक होता है।
- छोटे केले में बड़े केले से ज्यादा कैल्शियम होता है।
- रसौली की गलाने वाली सारी दवाएँ चूने से बनती हैं।
- हेपेटाइट्स A से E तक के लिए चूना बेहतर है।
- एंटी टिटनेस के लिए हाईपेरियम 200 की दो-दो बूंद 10-10 मिनट पर तीन बार दें।
- ऐसी चोट जिसमे खून जम गया हो उसके लिए नैट्रमसल्फ दो-दो बूंद 10-10 मिनट पर तीन बार दें। बच्चों को एक बूंद पानी में डालकर दें ।
- मोटापे में कैल्शियम की कमी होती है अत: त्रिफला दें। त्रिकूट (सोंठ+कालीमिर्च+मघा पीपली) भी दे सकते हैं।

कण–कण में व्याप्त हैं भगवान

भगवान कण–कण में विराजमान हैं। यह बौद्धिकता है, किंतु परमात्मा को प्रकट करना हार्दिकता है। तन के लिए जीतना भोजन आवश्यक है, मन के लिए भजन उतना ही आवश्यक है, जैसे बिना भूख के समय होने पर भोजन कर लेते हैं, वैसे ही मन न लगने पर समय से भजन करें। परमात्मा का मिलन संत की कृपा से होता है। राम–सुग्रीव का मिलन भगवान हनुमान जी जैसे संत ही करा सकते हैं। जब कोई काल से डरता है तो संत भगवान की स्मृति दिलाकर उसे निर्भय करते हैं। जब कोई भगवान से न डरे तो संत काल का भय दिखाकर उसमें भय उत्पन्न कर भगवान से जोड़ देते हैं। विभीषण ने हनुमान जी में भगवान को देखा। भक्ति विज्ञान है, अंधविश्वास नहीं। जैसे पानी में बिजली है, इसको जानकार बिजली पैदा करते हैं, यह विज्ञान है। कण–कण में परमात्मा विराजमान हैं। यह भाव ही श्रेष्ठ है। जिस प्रकार से सूर्योदय होने से घोर कोहरा छंट जाता है, उसी प्रकार भक्ति से पाप कर्म धुल जाता है। कितनी ही धर्मार्थ यात्रा, गंगा स्नान, यज्ञ, धर्म, पाठ कर लें, किंतु एक भक्ति ही उसे अपने अधीन बना लेती है। सच्चे भक्त को कर्म–धर्म करने की आवश्यकता नहीं होती। भगवान जिनके रोम–रोम में है, जिसके मुंह से सूर्य के समान ज्वालाएं निकल रही हैं, जिनमें अनंत मात्रा का ऐश्वर्य हो, ऐसे श्रीकृष्ण ही हैं। उनकी हमें पांच भावों – शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की उपासना करनी चाहिए। इन सबमें श्रेष्ठ माधुर्य भाव ही है।

माधुर्य भाव ही सर्वाधिक सामिप्य है। इस भाव में हम प्रेयसी हैं, वे हमारे प्रियतम हैं, ऐसी भावना निरंतर रहती है। अब लौकिक उदाहरण के अनुसार जैसे प्रेयसी का संबंध पति से अत्यंत निकट का होता है, पुत्र का उससे कम, सखा का उससे कम, दास का उससे भी कम तथा प्रजा का संबंध कम निकट का होता है। हमें भगवान श्रीकृष्ण की माधुर्य भाव से भक्ति करनी चाहिए।

पाक्षिक पंचांग

13 से 26 अक्टूबर 2025
विक्रम संवत् 2082
कार्तिक कृष्ण 7 से कार्तिक शुक्ल 5 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
13	अक्टूबर	सोम	कार्तिक कृष्ण	7
14	अक्टूबर	मंगल	----------	8
15	अक्टूबर	बुध	----------	9
16	अक्टूबर	गुरु	----------	10
17	अक्टूबर	शुक्र	----------	11 रंभा एकादशी
18	अक्टूबर	शनि	----------	12 प्रदोष व्रत, धनतेरस
19	अक्टूबर	रवि	----------	13 शिव चतुर्थी व्रत
20	अक्टूबर	सोम	----------	14 दीपावली
21	अक्टूबर	मंगल	----------	30 स्ना.दा. अमावस्या
22	अक्टूबर	बुध	कार्तिक शुक्ल	1 गोवर्धन पूजा
23	अक्टूबर	गुरु	----------	2 भाई दोज
24	अक्टूबर	शुक्र	----------	3
25	अक्टूबर	शनि	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
26	अक्टूबर	रवि	----------	5 पांडव पंचमी

प्रदेश में जूट की खेती को बढ़ावा देने की तैयारी

एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण सह किसान सम्मेलन आयोजित

रायपुर। छत्तीसगढ़ में जूट की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करने हेतु विगत दिवस इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, में एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण सह वैज्ञानिक किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण जूट की खेती परियोजना के तहत आईबीआईटीएफ द्वारा वित्त पोषित और आईआईटी भिलाई के सहयोग से आयोजित किया गया।

इस प्रशिक्षण में राष्ट्रीय जूट बोर्ड के वैज्ञानिक डॉ. नीलेन्दु भौमिक और तकनीकी सहायक ने जूट से यांत्रिक फाइबर निष्कर्षण पर व्याख्यान दिया है। उन्होंने बारीक निष्कर्षण को आसान बनाने के लिए एक रिबनर मशीन का प्रदर्शन किया है। आईआईटी भिलाई के निदेशक डॉ. राजीव प्रकाश और इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान संचालक डॉ. विवेक त्रिपाठी ने प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाया। डॉ. राजीव प्रकाश ने रेशे की गुणवत्ता पर रेटिंग प्रक्रिया के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. विवेक त्रिपाठी ने किसानों से खरीफ के लिए चावल के अलावा अन्य विकल्पों पर विचार करने को कहा। उन्होंने कहा कि किसान खरीफ में चावल उगाने से पहले ग्रीष्मकालीन फसल के रूप में जूट की खेती कर सकते हैं। इससे किसानों को पारिश्रमिक मिलेगा और उनकी आजीविका में सुधार होगा। जूट परियोजना की सह अन्वेषक डॉ. प्रज्ञा पांडे ने जूट की उन्नत खेती की पद्धतियों पर व्याख्यान दिया। डॉ. अरुण उपाध्याय ने एंजाइमेटिक रेटिंग तकनीक पर व्याख्यान दिया। इस सम्मेलन में धमतरी और रायपुर के 30 किसानों ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और व्याख्यान, मशीन प्रदर्शन और जूट के अवलोकन के माध्यम से जूट उत्पादन के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस खरीफ मौसम में धमतरी जिले में 4 एकड़ भूमि पर जूट की खेती चल रही है।

डॉ. वर्मा को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

रायपुर। कृषि विज्ञान केंद्र, मुंगेली को बागवानी के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एस. के. वर्मा को प्रतिष्ठित 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें 10वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ग्लोबल रिसर्च इनिशिएटिव फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड एलाइड साइंसेज़' के दौरान प्रदान किया गया, जो 5 से 7 अक्टूबर 2025 तक एमपीयूएटी, उदयपुर (राजस्थान) में सम्पन्न हुआ।

यह सम्मान मुख्य अतिथि डॉ. अनिल कुमार सिंह, पूर्व कुलपति, आरवीएसकेवीवी, ग्वालियर एवं पूर्व उप महानिदेशक (एनआरएम), आईसीएआर, नई दिल्ली द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ. बी. के. चक्रवर्ती, पूर्व निदेशक, बांग्लादेश सरकार, डॉ. यू. एस. शर्मा, पूर्व कुलपति, एमपीयूएटी, उदयपुर, तथा सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अजीत कुमार कर्णाटक, कुलपति, एमपीयूएटी, उदयपुर भी उपस्थित रहे।

बरबट्टी और खीरा की खेती से आत्मनिर्भर बने श्री साहू

रायपुर। कहते हैं कडी मेहनत, लगन और सही दिशा में किया गया प्रयास हर मुश्किल को आसान बना देता है। इसी बात को सच कर दिखाया है रायगढ जिले के खरसिया विकासखंड के ग्राम बाह्मनपाली के प्रगतिशील किसान श्री राज कुमार साहू ने। उन्होंने पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर बरबट्टी और खीरा जैसी नकदी फसलों को अपनाया और सीमित संसाधनों के बावजूद आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल की। श्री साहू ने उद्यान विभाग के तकनीकी मार्गदर्शन, उन्नत बीज, संतुलित खाद और समय पर सिंचाई के कारण अपने खेत के एक एकड़ क्षेत्र में बरबट्टी की खेती की और प्रति एकड़ 100 क्विंटल का उत्पादन प्राप्त किया। बरबट्टी का बाजार मूल्य 35 रु. प्रति किलो रहा। प्रति एकड़ 2 लाख रूपए की लागत आने के बाद भी उन्होंने 1 एक लाख 50 हजार रूपए का शुद्ध लाभ कमाया।

बरबट्टी के साथ श्री साहू ने एक एकड़ में खीरा की भी खेती की। समय पर जैविक खाद और उचित सिंचाई व्यवस्था के कारण प्रति एकड़ 120 क्विंटल उत्पादन मिला। खीरा का बाजार मूल्य 20 रु. प्रति किलो रहा। लागत लगभग एक लाख रूपए आने के बाद, उन्हें एक लाख 20 हजार रूपए का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। बरबट्टी और खीरा दोनों फसलों से श्री साहू ने केवल दो एकड़ भूमि में 2 लाख 70 हजार रूपए का शुद्ध लाभ अर्जित किया।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/-
⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम .....पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत
भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

राष्ट्रीय सम्मेलन के सुझाव पर क्रियान्वयन करेगी राज्य सरकार : कृषि मंत्री श्री नेताम

इंडियन वेटनरी और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, दुर्ग में खुलेगा कृषि महाविद्यालय

रायपुर। कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम के मुख्य आतिथ्य में इंडियन वेटनरी और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में वन हेल्थ सिनर्जी (एक स्वास्थ्य तालमेल) को मज़बूत करना- 'अंतर-क्षेत्रीय नवाचार और एकीकरण के माध्यम से एएमआर (एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध) का मुकाबला' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आज शुभारंभ हुआ।

समारोह को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री श्री नेताम ने कहा कि यह दो दिवसीय सम्मेलन पशु एवं मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और वन्य जीवों के बीच बहुक्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की हमारी साझा प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। जिसका उद्देश्य वन हेल्थ फ्रेमवर्क के अंतर्गत एन्टीमाइक्रोबियल रेसिसटेंस (एएमआर) की बढ़ती चुनौती से प्रभावी ढंग से निराकरण करना है। उन्होंने आयोजकों से कहा कि इस सम्मेलन में दिए गए सुझाव को केन्द्र व राज्य सरकार को अवगत कराएं। ताकि इसका क्रियान्यन सरकार द्वारा और बेहतर ढ़ंग से किया जा सके।

कृषि मंत्री श्री नेताम ने कहा कि छत्तीसगढ़ प्रदेश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों से पशु पालन को बढ़ावा दिया जा सकता है। साथ ही कृषि के मामले में जैविक खेती पर जोर देते हुए कहा कि किसानों को जैविक एवं प्राकृतिक खेती की दिशा में आगे आना चाहिए।

उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि वे जैविक खेती को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं और वैज्ञानिक तकनीको को अपनाकर उत्पादन बढ़ाने का प्रयास करें। कृषि मंत्री श्री नेताम ने कहा कि विकसित भारत के साथ विकसित छत्तीसगढ़ निर्माण के लिए कृषि एवं पशुपालन विभाग के माध्यम से किसानों को हर संभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। उन्होंने दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री चंद्राकर की मांग पर कामधेनु विश्वविद्यालय अंतर्गत दुर्ग में कृषि महाविद्यालय की घोषणा की। समारोह के दौरान मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों ने विश्वविद्यालय की स्मारिका, सोवेनियर बकरी प्रशिक्षण कैलेण्डर 2026 का विमोचन किया।

सांसद श्री विजय बघेल ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में दुर्ग में राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई दी।

दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चंद्राकर और विधायक श्री डोमनलाल कोर्सेवाड़ा ने भी सम्मेलन को संबोधित किया। कामधेनु विश्वविद्यालय के प्रभारी डीन डॉ. संजय शाक्य अपने स्वागत उद्बोधन में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर भारत सरकार के पशुपालन आयुक्त डॉ. प्रवीण मलिक, कार्यपालन निर्देशक एवं एम्स रायपुर के सीईओ लेफ्टीनेंट जनरल अशोक जिंदल, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, कुलपति लुआस, हिसार (हरियाणा) डॉ. विनोद कुमार वर्मा, निर्देशक एनआईओएच नागपुर डॉ. प्रज्ञा यादव, मुख्य महाप्रबंधक नाबार्ड डॉ. जी. मणि, अध्यक्ष इंडियन वेटनरी एसोसिएशन डॉ. सुधिर कुमार सहित विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं निर्देशक शिक्षक उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के शुभारंभ पर

पीपीएल का जागरुकता एवं लांचिंग कार्यक्रम

रायपुर (छत्तीसगढ़)। पूरे देश में 'प्रधानमंत्री' धन-धान्य कृषि योजना (PMDDKY)' का भव्य शुभारंभ हुआ, जिसका उद्देश्य कृषि उत्पादकता बढ़ाना और किसानों की आय में वृद्धि करना है। इसी कड़ी में, प्रमुख उर्वरक कंपनी पारादीप फॉस्फेट्स लिमिटेड ने छत्तीसगढ़ के किसानों तक इस योजना का लाभ पहुंचाने के लिए रायपुर रीजनल ऑफिस के अंतर्गत एक व्यापक जागरूकता और लॉन्चिंग कार्यक्रम का आयोजन किया।

पीपीएल ने राज्य के विभिन्न जिलों में फैले 15 प्रधान मंत्री किसान समृद्धि केंद्रों (PMKSK) पर विशेष बैठकें आयोजित कीं, जिसमें कंपनी के अधिकारियों और जय किसान सलाहकारों ने हिस्सा लिया।

मुख्य कार्यक्रम और उपस्थिति : यह कार्यक्रम रायपुर से लेकर बस्तर, सरगुजा, धमतरी, बेमेतरा, बलोदा-बाजार, कांकेर ,दुर्ग और रायगढ़ तक के महत्वपूर्ण कृषि केंद्रों पर आयोजित किया गया। पीपीएल की टीम ने किसानों, खुदरा विक्रेताओं और सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों को एकत्रित कर केंद्र सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना के मुख्य बिंदुओं की जानकारी दी और साथ ही साथ प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी दिखाया गया।

प्रमुख उपस्थित अधिकारी

बैठकों में पीपीएल के रिजिनल मैनेजर श्री मलय सरकार और मार्केट डेवलपमेंट मैनेजर श्री अमरीश अहलावत के नेतृत्व में क्षेत्रीय मार्केटिंग ऑफिसर जैसे श्री अजय वर्मा (रायपुर), श्री नवीन बंसल (दुर्ग), श्री जया गोविंद दास (धमतरी), श्री हरिकिशन बाजपेयी (अंबिकापुर), श्री कल्याण डे (रायगढ़) और श्री धर्मेंद्र मिश्रा (जगदलपुर) मौजूद रहे। इसके अलावा, कंपनी के कृषिविद् (Agronomist) और %जय किसान सलाहकार' टीम ने किसानों को तकनीकी जानकारी प्रदान की।

PMDDKY पर मुख्य फोकस : पीपीएलअधिकारियों ने बताया कि PMDDKY 100 कम उत्पादकता वाले जिलों को लक्षित करती है। इस योजना के पांच प्रमुख स्तंभों पर ज़ोर दिया गया:

उत्पादकता वृद्धि : उन्नत बीज, उर्वरक और कृषि तकनीक का उपयोग।

फसल विविधीकरण : पारंपरिक फसलों के साथ-साथ दलहन और उच्च मूल्य वाली फसलों को बढ़ावा देना।

भंडारण क्षमता : पंचायत और ब्लॉक स्तर पर नए गोदामों का निर्माण।

सिंचाई सुविधा: ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी जल-कुशल सिंचाई प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करना।

ऋण उपलब्धता : किसानों के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक कृषि ऋण की आसान पहुंच।

पीपीएल की प्रतिबद्धता

इस अवसर पर, पीपीएल के MDM, श्री अमरीश अहलावत ने कहा, 'प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना भारतीय कृषि के लिए एक नया अध्याय है। PMKSK के माध्यम से, हम न केवल उच्च गुणवत्ता वाले उर्वरक उपलब्ध करा रहे हैं, बल्कि इस योजना को लागू करने में भी सक्रिय भागीदार बन रहे हैं।

कंपनी के 'अधिकारियों' व 'जय किसान सलाहकारों' ने विभिन्न केंद्रों (जैसे खरोरा, भाटापारा, तरेगा, साजा, अम्बिकापुर, पत्थलगाँव, रियापाली, सर्गावां, सिरिसगुद, बेंगेदर, डोमा, नौकेक्षा, अमलहदी व देवकर) पर किसानों को PMDDKY के तहत मिलने वाली सब्सिडी, क्रेडिट लाभ और पीपीएल के विशेषज्ञता-आधारित उत्पादों के सही उपयोग के बारे में विस्तार से समझाया।

प्रधानमंत्री ने किया महिंद्रा ट्रैक्टर्स कौशल विकास केंद्र का उद्घाटन

मुंबई (कृषक जगत)। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मुंबई से महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में महिंद्रा ट्रैक्टर के कौशल विकास केंद्र का वर्चुअल उद्घाटन किया। इस ऐतिहासिक पहल का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को उद्योग-संबंधित कौशल से लैस करके उन्हें सशक्त बनाना है, जिससे क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर खुलेंगे।

भारत के नंबर 1 ट्रैक्टर ब्रांड, महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने भारत के ग्रामीण कौशल और आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग (डीवीईटी) और महाराष्ट्र राज्य कौशल विकास सोसायटी (एमएसएसडीएस) के साथ साझेदारी में गवर्नमेंट आईटीआई कॉलेज, गढ़चिरौली में इस कौशल विकास केंद्र की स्थापना की। नया केंद्र गढ़चिरौली के युवाओं को उद्योग-योग्य कौशल से लैस करने के साथ-साथ स्थानीय आजीविका को बढ़ावा देने पर भी केंद्रित है।

गढ़चिरौली में ट्रैक्टर कौशल विकास केंद्र के माध्यम से, महिंद्रा ट्रैक्टर और कृषि मशीनरी में बेजोड़ उद्योग विशेषज्ञता के साथ-साथ उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता भी लाएगा। यह एक संरचित पाठ्यक्रम के माध्यम से संभव हुआ है, जिसे सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षकों द्वारा संचालित किया जाता है, जो ग्रामीण युवाओं को सबसे आधुनिक तकनीकी उपकरणों तक पहुँच प्रदान करते हैं और ट्रैक्टर से संबंधित कौशल के विभिन्न पहलुओं में व्यावहारिक अनुभव प्रदान करते हैं। इस अवसर पर महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. के कृषि उपकरण व्यवसाय के अध्यक्ष, श्री विजय नाकरा ने कहा , 'महिंद्रा में हम इस बात से बेहद सम्मानित महसूस कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री ने गढ़चिरौली में महिंद्रा ट्रैक्टर कौशल विकास केंद्र का उद्घाटन किया। महाराष्ट्र न केवल एक अग्रणी औद्योगिक केंद्र है, बल्कि एक ऐसा राज्य है जो कृषि क्षेत्र की विकास यात्रा से गहराई से जुड़ा हुआ है। महाराष्ट्र सरकार के साथ साझेदारी करना हमारे लिए गर्व की बात है।'

ICL
ICL – पोषण जो लाए
रंग, तीखापन और मुनाफ़ा!
ICL के उन्नत पोषण समाधानों के साथ पाएँ
हर फसल में मजबूती, संतुलन और भरपूर उत्पादन।
आज ही हमारे टोल-फ्री नंबर पर कॉल करें और अपने नज़दीकी ICL डीलर/रीटेलर से ICL के प्रोडक्ट्स ख़रीदें।
FertiFlow Grow
FertiFlow Bloom
Polysulphate
(Dihydrate Poly halite)
POLYSULPHATE PREMIUM
FertiFlow Tomato I
NPK 16-11-32
FertiFlow Tomato II
NPK 13-5-37+3CaO
NutriVant
25 Kg
www.icl-growingsolutions.com/en-in/
Toll Free no. 1800 210 3031
CONNECT US